पंचदीप भारती

वर्ष–2017 अंक –13

मुख्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

www.esic.nic.in, www.esichospitals.gov.in

www.facebook.com/esichq @esichq

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा 26 अक्तूबर, 2016 को क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, अहमदाबाद का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा 9 मई, 2017 को राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, दिल्ली का निरीक्षण

पंचदीप भारती

(छमाही प्रकाशन)
तेरहवां अंक
वर्ष 2017

प्रधान संरक्षक
दीपक कुमार, भा.प्र.से.
महानिदेशक

संरक्षक
स्वदेश कुमार गर्ग
बीमा आयुक्त

मार्गदर्शक
उपेन्द्र शर्मा
निदेशक(राजभाषा प्रभारी)

संपादक
श्याम सुंदर कथूरिया
उप निदेशक (राजभाषा)

प्रबंध संपादक
विनीता
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संपादकीय सहयोग
अमृत लाल
निजी सचिव

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित लेखक का है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।
कर्मचारी राज्य बीमा निगम के सभी कार्मिकों से सुझाव/टिप्पणी तथा सितंबर, 2017 में प्रकाश्य अंक के लिए पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं 16 अगस्त, 2017 तक फोटो, पता एवं दूरभाष संख्या सहित आमंत्रित हैं।

प्रकाशक
राजभाषा शाखा, मुख्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली–110002
दूरभाष : 011–2324092 (वि. 431)
फैक्स : 011–23234537, 23239867
वीओआइपी : 10011080
ई–मेल : ss.kathuria@esic.in
वेबसाइट : www.esic.nic.in

मुद्रक : इंटरऐड्स एडवर्टाइजिंग प्राइवेट लिमिटेड
दूरभाष : 011–23260062, 23279453
ई–मेल : interadsadvert@gmail.com
(केवल निःशुल्क सीमित वितरण के लिए)

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ सं
संदेश	2
संपादकीय	5
क्या है पंचदीप भारती	6
भारत का संविधान अनुच्छेद 343 : संघ की राजभाषा	7
धन्य पुरुष	10
क.रा.बी. निगम में प्रचलित बीमा एवं चिकित्सा शब्दावली	11
मेरी सहेली	14
पागल मन	15
प्रेमांकुर	16
तीसरा कौन?	17
क.रा.बी. निगम मुख्यालय में प्रथम राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस	18
मेरी प्यारी बिटिया	19
मेरी गोवर्धन परिक्रमा	20
भगवान	22
निगम मुख्यालय में राजभाषा गतिविधियाँ	23
निगम कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह	24
निगम कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियाँ	26
क.रा.बी. निगम के लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम में फोनेटिक हिंदी टंकण	27
यह जीवन क्या है?	31
ट्रेन से ऑफिस	32
परिधान	33
तमाचा	34
आंसू दिल की जुबान हैं	35
स्वप्न	37
कविता	38
वर्तमान में जीवन जीना	39
निगम, मुख्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन	40
क.रा.बी.निगम साकार करे सपने	41
कभी–कभी अचानक	42
आपका पत्र मिला	43

पत्रिका में नेट पर उपलब्ध चित्रों का साभार उपयोग किया गया है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली – 110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
www.esic.nic.in, www.esic.in

संदेश

मुझे अपार सुखद अनुभूति हो रही है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए तत्पर रहने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी निरंतर प्रयासरत है। क.रा.बी. निगम, मुख्यालय की हिंदी पत्रिका 'पंचदीप भारती' का प्रकाशन प्रत्येक छमाही में सतत् रूप से किया जा रहा है। इसी क्रम में 'पंचदीप भारती' के तेरहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह अंक हिंदी में अभिव्यक्ति क्षमता तथा प्रयुक्ति क्षेत्र को और अधिक व्यापक बनाने में सहायक सिद्ध होगा तथा क.रा.बी. निगम के कार्यकलापों की जानकारी जनसामान्य तक पहुँच सकेगी।

'पंचदीप भारती' के पिछले अंकों को कई बार विशिष्ट संस्थाओं तथा समितियों ने पत्रों, पुरस्कारों आदि के माध्यम से सराहा है और प्रशंसा भी की है। 'पंचदीप भारती' के वर्ष 2016 के अंकों को 'क' क्षेत्र के लिए 'परिवर्तन जन कल्याण समिति' से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके लिए पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को मेरी ओर से बधाई। इस प्रकार का सम्मान हमारे लिए प्रेरणा तथा प्रोत्साहन का स्रोत बनेगा।

शुभकामनाओं सहित,

दीपक कुमार
महानिदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली – 110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
www.esic.nic.in, www.esic.in

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत खुशी की बात है कि मुख्यालय, क.रा.बी. निगम अपनी हिंदी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के तेरहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। क.रा.बी. निगम एक सामाजिक सुरक्षा संगठन है, जिसकी सफलता बीमाकृत व्यक्तियों की संतुष्टि से ही है। परिवर्तन के इस दौर में अपनी सुविधाओं और कार्यों को बेहतर बनाने से संबंधित अपनी गतिविधियों की जानकारी सुगम और सरल तरीके से जनमानस तक पहुँचाने में राजभाषा हिंदी सहायिका की भूमिका निभाती रही है तथा गृह पत्रिका के माध्यम से इस कार्य को और भी गति प्राप्त होती है।

'पंचदीप भारती' के माध्यम से पाठकगण जान पाएंगे कि निगम राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को भी उतना ही महत्व देता है, जितना अपनी अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं को। निगम का प्रत्येक कार्मिक परोक्ष या अपरोक्ष रूप से राजभाषा हिंदी के प्रति सजग है और जागृत भी।

निगम में राजभाषा प्रभारी होने के नाते मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ी हर गतिविधि का हिस्सा रहा हूं और इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्वदेश कुमार गर्ग
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी. मार्ग, नई दिल्ली – 110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
www.esic.nic.in, www.esic.in

संदेश

'पंचदीप भारती' का प्रकाशन राजभाषा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ निगम के कार्मिकों के रचनात्मक पक्ष को भी प्रखर बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके अतिरिक्त यह पत्रिका हमें हमारी राजभाषा को आत्मसात करने के लिए भी प्रेरित करती है।

आशा है कि **'पंचदीप भारती'** का यह अंक भी पूर्व की भांति सभी पाठकों को पसंद आएगा तथा इस अंक से निगम कार्मिकों में हिंदी में कार्य करने के प्रति नए उत्साह का संचार होगा और हिंदी कामकाज का एक नया आयाम स्थापित होगा।

उपेन्द्र शर्मा
निदेशक(राजभाषा प्रभारी)

सम्पादकीय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम देश में संगठित क्षेत्र के कामगारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने वाला अग्रणी संगठन है। इसकी कार्यप्रणाली और गुणतापूर्ण सेवाओं को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली है और पुरस्कृत भी किया गया है।

इस निगम का प्रत्यक्ष संबंध अपने यहां पंजीकृत नियोक्ताओं और बीमाकृत व्यक्तियों के साथ रहता है अर्थात् यह सीधे–सीधे जनता से जुड़ा हुआ संगठन है। इसके अंतर्गत मुख्यतः बीमाकृत व्यक्तियों को नकद एवं चिकित्सा हितलाभ प्रदान किये जाते हैं। अतः यह सहज ही अपेक्षित है कि हम अपना सरकारी कामकाज जनता की आम बोलचाल की भाषा 'हिंदी' में ही करें। हमारा निगम इस दिशा में पूर्णतः प्रयासरत है।

यहां मैं श्री प्रभास कुमार झा, सचिव, राजभाषा विभाग की उस बात का उल्लेख करना चाहूंगा जो उन्होंने दिनांक 09–03–2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली की छमाही बैठक में रेखांकित की कि जब बैंकों ने अपना अधिकाधिक कामकाज हिंदी में निष्पादित किया तो उनके मुनाफे में 10% तक वृद्धि हुई। इस तथ्य पर सभी संगठनों/संस्थाओं को गौर करना चाहिए।

निगम पर भी संघ की राजभाषा नीति लागू होती है। तदनुसार यहां पर कार्रवाई की जाती है तथा राजभाषा गतिविधियां की जाती हैं। इसी क्रम में यह सूचित करना उपयुक्त होगा कि निगम के देश भर में फैले मुख्यालय सहित निदेशालय (चिकित्सा), क्षेत्रीय/उप क्षेत्रीय/प्रभागीय कार्यालयों एवं अस्पतालों जैसी 104 प्रमुख इकाइयों में से 52 इकाइयां विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रही हैं। इनमें से अनेक पत्रिकाओं को विभिन्न मंचों से सम्मानित भी किया जाता रहा है। किसी भी संगठन के लिए यह गौरव की बात है ।

यहां मुझे सुधि पाठकों एवं लेखकों को यह अवगत कराते हुए उल्लास की अनुभूति हो रही है कि 'पंचदीप भारती' के वर्ष 2016 के अंकों को ''परिवर्तन जन कल्याण समिति दिल्ली (पंजीकृत)'' ने 'क' क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। आशा है बेहतर अंक बनाने के लिए आपका सहयोग आगे भी मिलता रहेगा।

प्रस्तुत अंक को राजभाषा विभाग, भारत सरकार के दिशा–निदेशों के अनुसार तैयार करने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिपूर्ण यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

श्याम सुंदर कथूरिया
उप निदेशक(राजभाषा)

क्या है पंचदीप भारती

उमाशंकर मिश्र,
सहायक, उ.क्षे.कार्यालय
क.रा.बी. निगम, वाराणसी

किसी घर में नहीं, घाट में नहीं
किसी व्यस्ततम हाट में नहीं
हिंदी के ज्ञान का स्रोत है पंचदीप भारती।

विकास की धारा, कल–कल, छल–छल बहती नदियाँ
शीतल मंद हवा और प्यार का अहसास
इसकी रफ्तार को गति कहते हैं।

जिसे पढ़ने से हो सर्वांगीण विकास
उसे ही पंचदीप भारती कहते हैं।

ये चांद, ये सितारे, ये आसमां, ये बादल, ये फिजायें
ये वादियाँ, ये दिशायें, ये बिखरे हुए जज़्बात
इन व्यापक जलवों का हो जहाँ ज़िक्र
केवल पंचदीप भारती करती है इनकी फिक्र।

प्रकृति, स्नेह, मोहब्बत के जज़्बे का कोई तौल नहीं होता है,
पंचदीप भारती के लेखों का कोई मोल नहीं होता है।

किसी गली में नहीं, किसी कूचे में नहीं
किसी महल में नहीं, किसी झोपड़ी में नहीं
ज्ञान रूपी उन्नति के मार्ग का स्रोत है पंचदीप भारती।

भारत का संविधान
अनुच्छेद 343 : संघ की राजभाषा

डॉ. पन्ना प्रसाद
पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
मुख्यालय, क.रा.बी. निगम, दिल्ली

भारत के संविधान के भाग–17 में "संघ की भाषा" के अंतर्गत अनुच्छेद 343 हिंदी के संवैधानिक स्वरूप का आधार–स्तंभ है। यह संघ की राजभाषा का स्थापक अनुच्छेद है। अनुच्छेद 344 संक्रमणकालीन उपबंधों की व्याख्या करता है किंतु इसके विपरीत अनुच्छेद 343 हिंदी भाषा को दृढ़ता के साथ भारत सरकार के कार्य–संव्यवहार की भाषा के रूप में स्थापित करता है। इसके खण्ड (i) में लिखा है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। यदि संविधान के भाग–17 के चार अध्यायों के अनुच्छेद 344 से 351 तक कुल 8 अनुच्छेद तथा भाग–5 और भाग–6 के दो अनुच्छेद 120 और 210 अर्थात् संघ की भाषा के रूप में हिंदी से संबंधित कुल 10 अनुच्छेदों के स्थान पर केवल यही एक वक्तव्य होता कि "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी" तो भी सरकारी स्तर पर हिंदी को स्थापित करने के लिए उतनी ही ताकत मिलती। उससे इन वाक्यों की महत्ता और संविधान निर्माताओं की वैचारिक दृढ़ता का परिचय मिलता है।

हिंदी को भारत की भाषा के रूप में स्वीकार किए जाने की परंपरा बहुत पुरानी है। आचार्य केशव चंद्रसेन ने सन् 1875 में "सुलभ समाचार" में लिखा था, "यदि एक भाषा के न होने के कारण भारत में एकता नहीं होती है तो और चारा ही क्या है। तब सारे भारतवर्ष में एक भाषा का व्यवहार करना ही एकमात्र उपाय है। अभी कितनी ही भाषाएं भारत में प्रचलित हैं। हिंदी को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज ही यह एकता संपन्न हो सकती है।"

आधुनिक हिंदी भाषा के उन्नायक भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने जून, 1877 में इलाहाबाद में "हिंदी वर्द्धिनी सभा" में दिए गए अपने भाषण में कहा था कि अंग्रेजी पढ़ने से यद्यपि पश्चिमी देशों के अनेक आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, कला, शिक्षा, जीवन–दर्शन आदि का परिचय मिलता है किंतु आवश्यकता है इस संपूर्ण ज्ञान–राशि को हिंदी में उतारने की और, इस प्रकार विविध जानकारियों से संपन्न हिंदी को राजभाषा बनाने की –

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहु, भाषा माँहिं प्रचार।।
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करियल।
राजकाज दरबार में, फैला बहु यह रत्न।।

हिंदी को भारत की एकमात्र भाषा बनाने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में न केवल राजनेताओं या साहित्यकारों ने ही प्रयास किए अपितु वैरागी संतों–संन्यासियों ने भी राष्ट्र की इस आवश्यकता के लिए भरपूर प्रयत्न किए। स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एक बड़ा–सा स्मरण पत्र (मेमोरैंडम) तैयार करवाया था, जिस पर भारी संख्या में कश्मीर से कन्याकुमारी, अटक से कटक तक के देशवासियों के हस्ताक्षर करवाकर उसे महारानी विक्टोरिया को भेजा गया। इस संबंध में 18 अगस्त, 1882 ई. को स्वामी दयानंद ने अपने शिष्य कालीचरण को एक पत्र लिखा था, जो इस प्रकार है– 'उस समय आर्यभाषा (हिंदी) को राजकार्य में प्रवृत्त होने के लिए जो स्मरण–पत्र छपे हैं, उसे शीघ्र भेजें और आप लोग भी जहां तक हो सके.....आर्यभाषा (हिंदी) को राजकार्य में

प्रवृत्त होने के शीघ्र प्रयत्न कीजिए।' स्वामी दयानंद सरस्वती ने सर्वप्रथम भारतवर्ष की प्रादेशिक भाषाओं की एक लिपि होने की कल्पना की। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है, "जब पांच–पांच वर्ष के लड़के–लड़कियाँ हों, तब से देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराएँ।" इस दिशा में उनका सर्वप्रथम प्रयास भारत की राष्ट्रभाषा के निर्माण का था। उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया और यह अनुभव किया कि देश की अधिकतम जनता हिंदी भाषा समझती है, और अधिकतर भारतवासी हिंदी बोलते हैं, अतः हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है। इस अनुभूति के तुरंत बाद स्वामी दयानंद सरस्वती देवनागरी अक्षरों वाली आर्यभाषा (हिंदी) के बड़े पक्के पक्षपाती हुए। वे चाहते थे कि संपूर्ण भारतवर्ष में इसका प्रचार होना चाहिए।

महात्मा गांधी ने भी 20 अक्टूबर, 1917 ई. को द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन, भड़ौच में दिए गए अपने भाषण में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का पुरज़ोर समर्थन किया था। उन्होंने कहा कि इस समय अंग्रेज़ी का प्रयोग राष्ट्रभाषा के रूप में हो रहा है। वायसराय ने अपने भाषण में उम्मीद जताई है कि "अंग्रेज़ी भाषा दिन–प्रतिदिन इस देश में फैलेगी, हमारे परिवारों में प्रवेश करेगी और राष्ट्रभाषा के ऊँचे पद पर पहुँचेगी। ऊपर–ऊपर से देखें तो आज इस विचार का समर्थन किया जा सकता है। पर यदि हम गइराई से देखें तो पता चलेगा कि अंग्रेज़ी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती और न उसका प्रयत्न किया जाना चाहिए। तब राष्ट्रभाषा के क्या लक्षण होने चाहिए ? इस पर विचार करें–

1. वह भाषा सरकारी नौकरी के लिए आसान होनी चाहिए;
2. उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक काम–काज संभव होना चाहिए;
3. उस भाषा को भारत के ज्यादातर लोग बोलते हों;
4. वह भाषा राष्ट्रभाषा के लिए आसान होनी चाहिए;
5. उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अस्थायी स्थिति पर ज़ोर न दिया जाए। अंग्रेजी भाषा में इनमें से एक भी लक्षण संभव नहीं है।

तब कौन–सी भाषा उन पाँच लक्षणों से युक्त है? यह माने बिना काम चल ही नहीं सकता कि हिंदी भाषा में ये सारे लक्षण मौजूद हैं। इसे ही राष्ट्रभाषा होना चाहिए।"

15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। इसके पूर्व ही जुलाई, 1946 में स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने के लिए संविधान सभा का गठन हो चुका था। संविधान सभा में कुल 389 सदस्य थे। सबकी अपनी–अपनी भाषाएं और भाषाओं के प्रति अपना–अपना मोह। किसी एक भाषा पर मतैक्य स्थापित करना संभव नहीं था। डॉ. अम्बेडकर ने कहा था 'संविधान का कोई भी अनुच्छेद इतना विवादास्पद साबित नहीं हुआ जितना कि राजभाषा हिंदी से संबंधित अनुच्छेद।'

राष्ट्रभाषा के मुद्दे पर अंतिम निर्णायक चर्चा हुई। 12, 13 और 14 सितम्बर, 1949 को। सदस्यों ने आम सहमति से राष्ट्रभाषा शब्द छोड़ दिया और उसके स्थान पर 'राजभाषा' शब्द का चयन किया। 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी भारतवर्ष की राजभाषा घोषित की गई। अनंत शयनम आयंगर और कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी के भाषा संबंधी प्रस्ताव को मान्यता मिली। संविधान के भाग–17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक संघ की राजभाषा का स्वरूप और अधिकार अंकित किया गया।

अनुच्छेद 343

अनुच्छेद 343(1) में लिखा है, "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।" यह हिंदी की संवैधानिक स्थिति के संबंध में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कथन है। इन तीन वाक्यों में भाषा, लिपि और अंकों से संबंधित तीन बातें कही गई हैं। संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी का निश्चयन करके भाषा संबंधी विवादास्पद प्रश्न का समाधान कर दिया गया है। लेकिन इस भाषा की लिपि क्या होगी, इस पर भी शुरू से ही विवाद था। पंडित

नेहरू, पा. सुदर्शन, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी जैसे अनेक नेताओं और विद्वानों ने इसे रोमन लिपि में लिखने का सुझाव दिया था किंतु राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, के.एम. मुंशी, महात्मा गांधी, कृष्णा स्वामी अय्यर, अनंत शयनम् आयंगर जैसे नेताओं ने हिंदी को उसकी पारंपरिक लिपि देवनागरी में ही लिखे जाने की वकालत की। उनके अतिरिक्त आरंभ से ही महर्षि दयानंद सरस्वती, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, जस्टिस शारदाचरण मिश्र, लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, विनोबा भावे, काका कालेलकर जैसे विचारकों एवं विद्वानों ने देवनागरी का भरपूर समर्थन किया था। देवनागरी लिपि पूरी तरह भारतीय है। इसका विकास भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मी से हुआ है। यह भारतवर्ष में बोली जाने वाली अनेक भाषाओं की लिपि है। इसकी व्याप्ति और वैज्ञानिकता का विचार कर संविधान निर्माताओं ने इसे ही भारत की राजकीय लिपि घोषित किया।

संघ के शासकीय प्रयोग के लिए अंकों के स्वरूप पर भी कम विवाद नहीं हुआ। संविधान–निर्माण के समय जिन सदस्यों ने अंग्रेज़ी भाषा का समर्थन किया था, उनकी बात अनसुनी कर हिंदी को राजभाषा बना दिया गया। उन्होंने अपनी खीझ मिटाने के लिए अंतरराष्ट्रीय अंकों का सहारा लिया, यह मानकर कि ये अंक अंग्रेज़ी के हैं। किंतु भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ संविधान निर्माताओं से यह बात छिपी नहीं थी कि ये अंक पूर्णतः भारतीय हैं जो अरब, स्पेन से होते हुए 9वीं शताब्दी में यूरोप पहुँचे और फिर यूरोपियों के साथ ही इस देश में पंद्रहवीं शताब्दी में आए। हाँ, इस यात्रा में उनका रूप कुछ बदल अवश्य गया था, किंतु उनके निरपेक्ष मान, स्थान मान, दाशमिक स्वरूप की संकल्पना और शून्य के प्रयोग की विशिष्टता अक्षुण्ण थी। इसलिए विद्वान एवं राष्ट्रभक्त संविधान निर्माताओं ने उन्हें भारत के राजकीय कार्यों के लिए सुनिश्चित कर दिया और उनका नाम रखा "अंतरराष्ट्रीय अंक"। इस प्रकार अंकों के विवाद का भी पटाक्षेप हुआ।

अनुच्छेद 343(2) : खंड(i) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी, भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिसके लिए उसका ऐसे आरंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था।

प्रथम दृष्ट्या इस उपखंड के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि हिंदी के समर्थक राष्ट्रवादियों का उत्साह व्यर्थ हो गया, किंतु अहिंदीभाषियों की सुविधाओं और देश की एकता को सुरक्षित रखते हुए उससे अच्छा कोई निर्णय हो भी नहीं सकता था। पंद्रह वर्ष की अवधि बहुत होती है। हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि को सीखने के लिए एक वर्ष ही पर्याप्त होता, किंतु उसके अखिल भारतीय विस्तार के लिए पंद्रह वर्ष का सुदीप समय उदारतापूर्वक प्रदान कर दिया गया।

चूंकि हमारे देश में भाषा के स्वरूप पर विचार करने के लिए संसद ही अधिकृत है और संसद ने पंद्रह वर्ष तक अंग्रेज़ी को यथावत जारी रखने का विधान कर दिया था, इसलिए इन पंद्रह वर्षों की अवधि के भीतर हिंदी के प्रयोग और विस्तार के लिए राष्ट्रपति को अधिकृत कर दिया गया कि वे चाहें तो अपने आदेश के माध्यम से कहीं–कहीं हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रयोग करा सकते हैं। इस उद्देश्य के लिए उपखंड (2) में एक परंतुक जोड़ा गया :

"परंतु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेज़ी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।"

और, समय–समय पर राष्ट्रपति ने इस परंतुक का उपयोग किया भी। उन्होंने सन् 1952 में, 1955 और 1960 में तीन आदेश जारी किए, जिनमें राज्यपालों, उच्चतम/उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के नियुक्ति–अधिपत्रों, जनता के साथ पत्र–व्यवहार, प्रशासनिक रिपोर्टों आदि में अंग्रेज़ी के अतिरिक्त हिंदी के प्रयोग को प्राधिकृत किया गया। इसके साथ ही वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, सांविधिक नियमों आदि के अनुवाद, मानक विधि शब्दावली के निर्माण आदि के भी आदेश दिए गए।

और, जब पंद्रह वर्ष की संविधान–सम्मत अवधि बीत

जाए तब क्या होगा? तब उपखंड (3) का उपबंध लागू होगा, जिसमें कहा गया है कि, "इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पंद्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा–(क) अंग्रेज़ी भाषा का, या (ख) अंकों के देवनागरी रूप का ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएँ।"

तात्पर्य यह है कि पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् संसद फिर प्रभावी हो जाएगी और अंग्रेज़ी के प्रयोग या कि देवनागरी अंकों के प्रयोग के लिए कानून बना सकेगी। 'फिर' इसलिए कि संविधान सभा को भी संसद मान लिया गया है। पंद्रह वर्ष बाद जो संसद अस्तित्व में आई उसने अंग्रेज़ी भाषा के प्रयोग को जारी रखने के लिए कानून बनाया जिसे 'राजभाषा अधिनियम, 1963' कहा गया और वह 26 जनवरी, 1965 को सामान्य रूप से लागू हुआ। अंकों के देवनागरी रूप के प्रयोग पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

अनुच्छेद 343 राजभाषा हिंदी का आधारभूत उपबंध है। इसने हिंदी को बहुत गहराई से और बहुत दूर तक प्रभावित किया है। सन् 1950 के बाद हिंदी की जो भी गति–प्रगति हुई है उन सबके बीज अनुच्छेद 343 में विद्यमान थे। फिर भी यही कहा जा सकता है कि जिन परिस्थितियों में संविधान की रचना हुई उनमें इससे अच्छा उपबंध हो भी नहीं सकता था।

धन्य पुरुष

भूपसिंह यादव
अर्थ मंत्री केंद्रीय सचिवालय
हिंदी परिषद्, दिल्ली

भव सागर का रतन वही है, जिसमें कुछ निर्मलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है।।
इन नामों से नर जीवन का वृक्ष फूलता–फलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है।।
नाम हुआ है ब्रज में कृष्ण कन्हैया रूप निराले का।
कर्म किया वीरों का जिसने वेश बनाया ग्वाले का।।
चूर्ण किया मद कालिन्दी में, काली विषधर काले का।
अब तक भारत में घर–घर यश छाया बंशीवाले का।।
मुख से कृष्ण नाम कहते ही मन का पाप निकलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है।।
इतिहास में नाम हुए आदर्श अमर करने वाले।
ऐसे ही सत्कर्मों से कुछ भूमि भार भी टलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है।।
नर की शोभा और बड़ाई मानवता से होती है।
बदनामों के वर्णन में कवियों की कविता रोती है।।
काया क्या है?
सीप, मित्रो, सत्कर्म सीप का मोती है।
ग्रन्थ सूत्र में इन्हीं मोतियों को लेखिनी पिरोती है।।
जिसके श्रवण मात्र से ही जीवन का मार्ग संभलता है।
धन्य पुरुष है वही कि जिसका नाम जगत में चलता है।।

क.रा.बी. निगम में प्रचलित बीमा एवं चिकित्सा शब्दावली

क्षेत्रपाल शर्मा
पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा), मुख्यालय, क.रा.बी. निगम, दिल्ली

बीमा व्यवसाय में एक विशेष प्रकार की शब्दावली प्रयोग में लाई जाती है। इनके कार्यकलाप के अनुसार जनरल इन्श्योरेंस आदि की पॉलिसी पर एक इन्श्योरेंस है। यदि अमुक घटना हुई तभी रिस्क(जोखिम) कवर होगा। यह भी लिखा देखा होगा कि बीमा एक आग्रह की वस्तु है। जब प्रीमियम देते हैं तब उसे एक अवधि तक जारी रखना जरूरी होता है, अन्यथा सरेंडर वैल्यू पॉलिसी के अवधि पूर्व भुगतान पर प्रीमियम की रकम से कम होने पर घाटे का सौदा साबित होती है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम में बीमा शब्द जरूर है, लेकिन इसमें और अन्य बीमा कंपनियों में अंतर है। पहला अंतर यह है कि भारतीय जीवन बीमा निगम, नेशनल इन्श्योरेंस आदि कंपनी रजिस्ट्रार के यहां पंजीकृत कंपनी हैं जबकि क.रा.बी.निगम, श्रम और रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय है तथा क.रा.बी.अधिनियम भारत का संविधान बनने से भी पूर्व का है। वैधानिक रूप से बजट आदि का भी भेद है। क.रा.बी.निगम एक गैर लाभकारी संगठन भी है, जबकि कंपनियां लाभ होने पर लाभांश बांटती हैं।

क.रा.बी.निगम तथा कुछ अन्य बीमा कंपनियों में प्रमुख अंतर निम्नप्रकार हैं–

क्रम	**अन्य कंपनियां**	**क.रा.बी.निगम**
1	स्वैच्छिक	कामगारों की संख्या पर अनिवार्य
2	प्रीमियम पर आधारित	अंशदान पर आधारित
3	समय पूर्ण होने पर आशयित रकम वापस	चिकित्सा, नकद तथा अन्य हितलाभ
4	प्रीमियम न देने पर लैप्स	अंशदान अनिवार्य
5	लाभ कमाने वाले संस्थान	न्यास के रूप में।

क.रा.बी.निगम में कुछ शब्द जो अधिनियम में दिए गए हैं और जो प्रचलित हैं उनका अंतर नीचे दिया गया है–

शब्द	**अधिनियम**	**प्रचलित**
Payment	संदाय	भुगतान
Contribution	अभिदाय	अंशदान
Insured	बीमाकृत	बीमित
Beneficiary	हिताधिकारी	लाभार्थी
Audit	संपरीक्षा	लेखापरीक्षा
Maternity	प्रसूति	मातृत्व
Benefit	प्रसुविधा	हितलाभ

आप कुछ नए शब्दों से भी परिचय पा सकते हैं, जैसे–

Immediate employer= आसन्न नियोक्ता

live list=पात्रता सूची

dead stock=जड़ वस्तु

disclaimer=अस्वीकरण

stakeholder=पणधारी

ombudsman=लोकपाल आदि। इन्हें सही तरीके से समझना ज़रूरी होगा।

अब कुछ चर्चा चिकित्सा से संबंधित शब्दावली की कर ली जाए।

Natal=जन्म संबंधी और confinement=प्रसवता के

सूक्ष्म अंतर को भी समझना ठीक रहेगा।

साथ ही हम abortion=गर्भपात(चिकित्सीय गर्भ समापन(MTP) जो अपनी इच्छा से कराया जाए) और miscarriage=गर्भस्राव (जो गर्भ धारण होने के 20 सप्ताह के अंदर प्राकृतिक कारणों से हो) के अंतर को समझना होगा।

इसी प्रकार चिकित्सा के क्षेत्र में Primary, secondary and tertiary health care जिनका हिंदी अनुवाद क्रमशः प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल किया गया है। ये वस्तुतः क्या हैं? सामान्यतया बीमार होने पर व्यक्ति चिकित्सक की दुकान या औषधालय, जो उसे सुलभ है, वहां गया और दवा लेकर एक–दो दिन में चंगा हो गया, यह प्राथमिक उपचार है। उसे जांच की ज़रूरत के साथ यूरोलॉजिस्ट, डर्मेटोलॉजिस्ट या त्वचा विशेषज्ञ आदि को रेफर किया

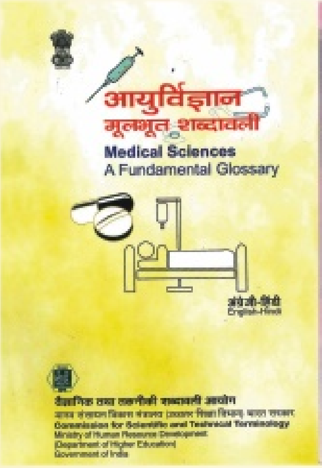

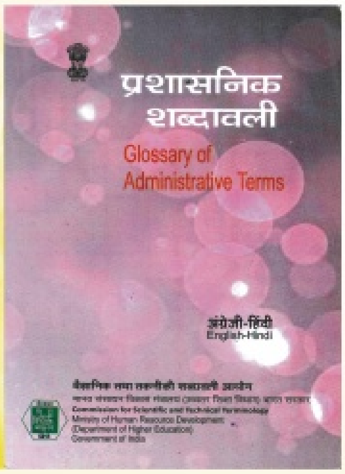

जाए तो यह सेकंडरी। यदि अति उच्च तकनीक और अति निपुण चिकित्सकों की देखरेख में भेजा जाए तथा वह जब सब एक छत के नीचे सुलभ हो, तो उसे टर्शियरी उपचार कहते हैं।

कई बार अस्पतालों में आने वाले लोग वह शब्दावली प्रयोग करते हैं जो देशज होती है, जैसे– पेट से है, पेट में मरोड़ और ऐंठन या दर्द है, पैर कट रहे हैं आदि। उनके रोग का सही निदान(diagnosis) तब होगा जब उनके भावार्थ को ठीक से समझा जाएगा।

Infections= संक्रमण (viral waterborne and contact) तब होता है जब स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाता। फिर उपचार(Treatment) के लिए पैसा, श्रम और समय के साथ–साथ तीमारदार/attendant/परिचर की दरकार होती है।

Injury=चोट

emergency=आपातकालीन

casualty=हताहत

depression=अवसाद

clinic=निदानशाला

trauma centre=अभिघात केंद्र

path lab=रोग निदान प्रयोगशाला आदि हिंदी समानार्थी जान लेने चाहिए।

Autopsy=शव परीक्षा

biopsy=जीवोति परीक्षा के अलावा रोगों और अंगों के सही हिंदी नाम भी जान लेने की आवश्यकता है। itis=शोथ अमूमन सूजन से संबंधित होता है।

Intra venous=अंतः शिरा

intra muscular= अंतःपेशीय

forensic medicine=न्यायुर्विज्ञान

medical jurisprudence=चिकित्सा न्यायशास्त्र

relapse=पुनरावर्तन (रोग का)

Anesthesia= संवेदनाहरण आदि के चलन पर्याय भी जानने चाहिए।

In patient=अंतःरोगी

Out patient=बाह्य रोगी

Distilled=आसवित

Chilled=ठंडा

Hyper=अति

Boiled Water=मात्र गरम जल नहीं, वरन वह जल जो क्वथनांक (जल के वाष्प बनने तक, अर्थात 100 डिग्री सेल्सियस) तक गर्म हो।

Unhygienic=अस्वच्छतापूर्ण

Infected=संक्रमित

Polluted=प्रदूषित

Contaminated=दूषित

Stale=बासी

Post mortem=शव परीक्षण

Foreign element=बाह्य तत्व

Nervousness=घबराहट

Lukewarm=गुनगुना (पानी)

Fatigue=थकान

Purgative=रेचक

Lesion=घाव

Tumor=शरीर के अंदर फोड़ा

Fibroid=रेशेदार

Dirty=गंदा

Chronic=जीर्ण

Bi-polar disorder=द्विध्रुवी विकार

Metabolism=उपापचय

Sensation=संवेदन

Ayush=(आयुष) आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध, होम्योपेथ

Surgery=शल्य

Hernia=आंत्रवृद्धि

Endocrinology=अंतःस्राविकी

Cardiac=हृदीय

Pulmonary=फुप्फुसी

Intestine=आंत्र

Lung=फेफड़े

Sensor=संवेदक

Fever=ज्वर

Transplant=प्रत्यारोपण

Seizures=दौरे पड़ना

Test=परीक्षण

Surgery=शल्य चिकित्सा

Lateral=पार्श्विक

Patients=रोगी

Drug=औषधि

अब कुछ चिकित्सा संक्षिप्तियों पर भी विचार कर लिया जाए।

PO=मुंह से

PP=खाने के बाद

P=नब्ज

qpm=हरेक शाम

qod=एक दिन छोड़कर

qhs=सोते समय

sos=जब ज़रूरत हो

Rx=ईश्वर के नाम पर

- stat = statum तत्काल
- p.r.n. = pro re nata = जब अपेक्षित हो
- o.d. = Omni die = दिन में एक बार
- b.d. = bis die sumendum = दिन में दो बार
- t.d.s. = ter die sumendum = दिन में तीन बार
- q.d.s. = quater die sumendum = दिन में चार बार
- o.n. = Omni nocte = प्रत्येक रात

मेरी सहेली

प्रवीण कुमार
उप निदेशक, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

जब मैं दो साल का था तब उसे बाहर खेलते देखता था। जैसे ही मैं बाहर जाता, वह भाग जाती। वह मुझसे छोटी थी लेकिन तेज दौड़ सकती थी। मैं उसे कभी पकड़ नहीं पाया। जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ और अकेले बाहर जाने लगा मैं उससे बात करना चाहता था लेकिन ऐसा कभी नहीं कर सका। मैं जब भी उससे बात करने की कोशिश करता वह भागकर एकदम नजरों से ओझल हो जाती थी।

मैं जानता था कि वह मेरे घर के आस–पास ही रहती है, लेकिन न तो मैं उससे बात कर सका और न ही उसका घर ढूंढ़ सका। कभी मैंने उसे अपने स्कूल के आस–पास देखा तो कभी अपनी नानी के घर के पास, पर उससे बात तक नहीं हो सकी। मेरी मां ने मुझे समझाया कि अच्छे घर के लड़के सड़क पर किसी के पीछे नहीं दौड़ते और मैंने इसका पालन किया।

जब मैं बड़ा हुआ तो कॉलेज में गया। वह वहां भी नज़र आई। मैं वहां भी उसके साथ बात करने का साहस नहीं जुटा पाया। कॉलेज खत्म होने के बाद मुझे रक्षा मुख्यालय में नौकरी मिल गई। कुछ दिन हुए थे कि वह मुझे सेना भवन में दिखाई दी। मैं आश्चर्यचकित था कि मैं उसका पीछा कर रहा हूं या वह मेरा पीछा कर रही है। हालांकि मैंने कभी भी उससे बात नहीं की थी, पर मैं हमेशा उसे दूर से ही निहारा करता था। हमारे संबंध कुछ इस तरह के थे कि वह मेरे आस–पास भी होती लेकिन बात नहीं करती और जब मैं उसके पास जाने की कोशिश करता तो वह भाग जाती।

कुछ समय बाद मेरी मां ने मेरे लिए एक दुल्हन का चयन किया और 1992 में भारतीय रीति–रिवाज़ के अनुसार मेरा विवाह हो गया। शादी के कुछ दिन बाद जब मैंने पहली बार अपनी पत्नी के साथ घर से बाहर कदम रखा तो देखा कि वह बाहर प्रतीक्षा कर रही है। शायद वह यह जानना चाहती थी कि मेरे साथ कौन है। हम विपरीत दिशा में चले गए। ऐसा कई अवसरों पर हुआ।

अचानक मैंने पाया कि न तो वह घर के नजदीक दिखाई दे रही है और न ही कहीं और। उससे मिलने के लिए मेरी उत्सुकता दिन–पर–दिन बढ़ने लगी। मेरी पत्नी मेरे साथ होती तब भी मेरी नजरें सदैव उसे ढूंढ़ती रहती।

लगभग तीन साल पहले मैं अपने परिवार के साथ शिमला घूमने गया था। मैं अपने परिवार के साथ शाम की चाय का आनंद ले रहा था। अचानक मैंने देखा कि वह सामने सड़क पर जा रही है। मैं तुरंत उठ कर बाहर गया। जब तक मैं बाहर पहुंचा, वह बहुत दूर जा चुकी थी। मैंने दूर से ही उसकी फोटो खींचने की कोशिश की लेकिन नहीं खींच सका। इतने में मेरी पत्नी और बेटी भी बाहर आ गयी। मेरी पत्नी ने मुझसे पूछा कि आप आधी चाय छोड़कर क्यों आ गये। मेरे पास पत्नी के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था। प्रश्न अनुत्तरित ही रहा और मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा।

हाल ही में मुझे अपने परिवार के साथ इंडोनेशिया की

यात्रा करने का अवसर मिला। हमने होटल में चेक–इन किया। जब हम रिसेप्शन से अपने कमरे की तरफ जा रहे थे तो मैंने उसे ओपेन एयर रेस्टोरेंट की एक मेज पर देखा। मैं उसे देखकर भौचक्का रह गया। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह अभी भी मेरा इंतजार कर रही है। कुछ देर बाद मैं अपने परिवार के साथ नाश्ते के लिए उसी रेस्टोरेंट में गया। वह अभी भी वहीं बैठी थी। हम उसकी बगल वाली मेज पर बैठ गए। मैंने सोचा कि अपने परिवार को अपने पहले प्यार से मिलवाने का यह सही समय है। मैंने उसी समय अपने परिवार से अपने पहले प्यार को मिलवाया। उससे मिलने पर पत्नी और बेटी ने विस्मय प्रकट किया और पूछा कि आपने पहले क्यों नहीं मिलवाया? मैंने उत्तर दिया कि वह हमारी शादी के तुरंत बाद दिल्ली से बाहर चली गई थी, उसके बाद वह एक बार शिमला में मिली और अब यहां मिली है। मेरी पत्नी मेरे पहले प्यार से मिल चुकी है। अब भेद खुलने का कोई डर नहीं है। क्या आप मेरे बचपन के प्यार से मिलना चाहेंगे? उसकी एकमात्र फोटो जो मेरे पास है वह नीचे छपी है। कहीं आप भी तो उसी से प्यार नहीं करते!

(भारत में मोबाइल फोन 1995 में लांच किया गया था। इसके तुरंत बाद से चिड़िया गोरैया दिल्ली से विलुप्त हो गई है।)

पागल मन

सपना मांगलिक
साहित्यकार
कमला नगर, आगरा

कभी ओस तो कभी बन बादल
उड़ता फिरे बिन पंख ही पागल
महल बनाए कैसे–कैसे
गिरे जो पल में पत्ते जैसे
दहकाये कभी शक की ज्वाला
कभी पिलाता प्रेम की हाला
कभी बंधन, कभी यह लगे चन्दन
मन ये मेरा, पागल सा मन।

प्रेमांकुर

मनीषा खलखो
क.हिं. अनुवादक, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

आज बंध जाना चाहती हूँ
तुम्हारी ईमानदारी से
बंधना पसंद नहीं था कभी
फिर भी....
तुम्हारी सादगी में रंगना चाहती हूँ
खुद को।
कहीं कुछ मीठा अनकहा था
जो आज हम बतियाते रहे
सारी रात।
फासलों के बीच भी
जैसे बहुत थे पास
एक–दूसरे के।
सुकून दे जाता है
तुम्हारा यूँ हंसना बतियाना
तुम्हारा यह अहसास दिलाना
कि खास हो तुम
मेरे जीवन में।
कहाँ से चलते हैं हम जीवन में
कुछ पल टकराते हैं,
अहसास जो कहीं उगते हैं
उसे समय के आंगन में
कई बार दफनाते हैं
पर वह अंकुर
प्रेम का
जो दबाया जाता है
सामाजिक हित में
वह फूटता है
कहीं न कहीं
कभी न कभी।

और हम फासलों के बीच भी
जैसे जुड़ते चले जाते हैं।
तुमने कहा–कि बता नहीं पाया तुम्हें
कि खास थी तुम मेरे लिए।
तुम्हें आज भी नहीं बताया मैंने,
तुम भी खास थे मेरे लिए।
पर आज यहाँ
जहाँ तुम नहीं हो
बता पा रही हूँ तुम्हें
अंकुर तो मेरे अंदर भी था
बस थोड़ी मिट्टी और नमी
कहीं दूर थे मुझसे।
आज कई सालों बाद जब मिले
तो तुम कह पाए
पर मैं आज भी नहीं कह पाई
तुम अलग और खास तो थे मेरे लिए
तब भी और अब भी।
आज नई जिम्मेदारियां हैं तुम संग
इसलिए आज इस नम भूमि में भी
वह अंकुर सहमा हुआ है
खुद को न पौधा
न ही पेड़
बना सकता है वह।
पर वह खुश है
उस नम भूमि को पाकर ही
जहाँ वह हंसेगा–रोएगा
और अपनी अंतिम सांस लेगा
उतनी ही आत्मीयता के साथ
जिसे मालूम है
पीला पत्ता जब शाखा से
अलग होगा
वह उस जमीं में मिल जाएगा
फिर कभी उसी ज़मीं में
कोई एक बीज प्रेम का
अंकुरित हो पाएगा
और वह पीला पत्ता
खत्म होकर भी
अपनी तमाम ऊर्जा
व सामर्थ्य
उसे सौंप जाएगा।

तीसरा कौन?

पल्लवी
बिजनिस एनालिस्ट,
एन.आइ.एस.जी. मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

"अजीब ही लड़की है, लड़कों की तरह ज़ोर–ज़ोर से हँसती है"। "लड़का हो कर क्या लड़कियों की तरह आँसू डाल रहा है!" एक ठहाका, कुछ शर्मनाक इशारे, बेहूदा आवाज़ और चुटकियाँ लेते हुए ताना – ये तीसरा कौन है?

क्या उसे सभ्य समाज कह सकते हैं, जहाँ हर मनुष्य का व्यवहार, आचरण मानिये जैसे टकसाली छवि की बेड़ियों में जकड़ा हो। व्यक्तिव का कोई मूल्य नहीं, क्षमताओं का कोई स्थान नहीं, भावनाओं से सरोकार नहीं और एक–दूजे का सम्मान नहीं। हावी है, तो सिर्फ लिंग। शारीरिक संरचना जिसके कारण एक मनुष्य दूजे से खुद को बेहतर मानता है। जिसकी रचयिता प्रकृति है, वह स्वयं नहीं फिर कैसे एक लिंग दूसरे लिंग से श्रेष्ठ हुआ?

घर में शिशु का जन्म उल्लास का पर्व होता है। सभी हृष्ट–पुष्ट बालक की कामना करते हैं। यदि किसी कारण से उस बालक में कोई जन्मजात विकृति हो तो जिस तरह परिवार और समाज का उससे मुंह मोड़ लेना अमानवीय है, उसी तरह लिंग की भिन्नता या भावनाओं की भिन्नता को नकारना अमानवीय क्यों नहीं?

जिस देश में आज भी भ्रूण हत्या की कुरीतियों के चलते, 'बेटी बचाओ' जैसी मुहिम जारी हो वहाँ समाज में कैसे मिलेगा बराबरी का अधिकार 'तीसरे लिंग 'यानि 'ट्रांसजेंडर' को?

क्यों ये दहला देने वाले भयावह स्वप्न की भाँति लगता है। क्यों यह शर्मनाक है उस व्यक्ति और उसके परिजनों के लिए? क्यों वह भद्दे हास्य का केंद्र है? क्यों वह शोषण सहने को विवश है? क्यों उसका निजी जीवन उधेड़ कर चौराहे पर टांग दिया जाता है? क्यों वह बौद्धिक और शारीरिक क्षमताएँ होते हुए भी घिनौने धंधों की ओर धकेल दिया जाता है? क्यों उसका जीवन अपमान, अकेलेपन, अँधेरे और गुमनामी को स्वीकार कर लेने को विवश है? दुखद है कि उसके जीवन पर सवाल उठाए जाते हैं, लेकिन उसके मरने पर कोई चर्चा नहीं होती। मरना सिर्फ शरीर में चेतना खत्म हो जाना नहीं है, मरना आशा का मर जाना है, मरना हार जाना है, मरना विवश होकर जीना भी है।

'ट्रांसजेंडर्स' में क्षमताओं का अभाव नहीं है। वह भी अन्य मनुष्यों की भांति ही जीवनयापन करने में सक्षम हो सकते हैं, स्वावलम्बी हो सकते हैं। आवश्यकता है समाज में उनकी सहज स्वीकृति की।

सरकार या कानून का यह दायित्व अवश्य है कि वह सभी के मूल अधिकारों की रक्षा करें और इस दिशा में ट्रांसजेंडर पर्सन्स (प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स) बिल भी लोकसभा तक 2016 में पहुँच पाया, पर यह भी सच है कि इससे जुड़े कानून बनने का सफ़र अभी बहुत लम्बा है। साथ ही समाज के हर व्यक्ति की भी ये ज़िम्मेदारी है कि वह एक दूसरे के प्रति संवेदनशील रहे, परस्पर आदर रखे और जीवन के मूल अधिकारों का हनन ना होने दे। हम सबको इस मुद्दे और इससे जुड़ी पीड़ा से सरोकार इसलिए भी होना चाहिए क्योंकि ये मसला निजी पहचान का है, अस्तित्व का है, आत्मसम्मान का है और किसी न किसी स्तर पर, किसी न किसी मोर्चे पर, हम सब कभी न कभी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हैं। ये स्वतंत्रता की लड़ाई का ही एक स्वरूप है।

इस नए वर्ष में यदि हम 'ट्रांसजेंडर्स' के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन ला पाएं, अपने आप से भिन्न आत्म–अभिव्यक्तियों को स्वीकारें, सहकर्मी के रूप में बराबरी का आदर दे सकें, उनकी उपस्थिति में सहज रहें एवं शिक्षा संस्थानों में भी पहचान पर प्रश्न उठाए बिना निष्पक्ष रहें, तो हमारा यह व्यवहार ही समाज में उनके गरिमापूर्ण समावेश को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। जब कभी हम 'ट्रांसजेंडर्स' के समक्ष हों तो हमारे चेहरे पर आशंकाएं नहीं अपितु संभावनाएं उभरें।

कोई भी व्यवस्था – प्यार, आदर, स्वीकृति, सहजता के बिना नहीं चल सकती। इसके लिए सभी को रूढ़िवादिता छोड़, अपनेपन का माहौल बनाना अति आवश्यक है। यही सही मायनों में देश की एवं समाज की प्रगति का सूचक है। हम पहले ही धर्म, जाति, वर्ग, प्रदेश की रेखाओं से विभाजित हैं, इस पर लैंगिक भेद तो जैसे मानवता की देह को बीचों–बीच से चीर देने जैसा साबित होगा।

अब बड़ा सवाल यह है कि क्या हमारा समाज कभी लिंग निरपेक्ष बन पाएगा ?

क.रा.बी. निगम मुख्यालय में प्रथम राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस

डॉ. जी. प्रभाकर राव
उप चिकित्सा आयुक्त
मुख्यालय, क.रा.बी. निगम, दिल्ली

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम में दिनांक 26.10. 2016 को धनवंतरी जयंती (धनतेरस) को उपयुक्त रीति से प्रथम राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाया गया तथा देशभर के सभी क.रा.बी. निगम अस्पतालों तथा औषधालयों में भी यह कार्यक्रम इसी दिन आयोजित किया गया।

यह समारोह एक बैठक के बाद धनवंतरी पूजन से आरंभ हुआ। श्री दीपक कुमार, महानिदेशक, क.रा.बी. निगम ने बाह्य रोग विभाग तथा पंचकर्म के माध्यम से अधिकतम संख्या में बीमाकृत व्यक्तियों तथा उनके परिजनों को आयुर्वेद सेवा देने के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने पर क. रा.बी. निगम के आयुर्वेदिक चिकित्सक–डॉ. जी. प्रभाकर राव, नोएडा; डॉ. आर.एन. सिंह ध्रुवे, दिल्ली; डॉ. वरलक्ष्मी, चेन्नै; डॉ. प्रवीण लता, दिल्ली; डॉ. पूजा मजोटा, लुधियाना को 'राष्ट्रीय धनवंतरी क.रा.बी. निगम प्रोत्साहन पुरस्कार' से सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री दीपक कुमार, महानिदेशक ने ''एसेंशियल आयुर्वेदिक ड्रग्स लिस्ट ऑफ ईएसआइसी'' नामक पुस्तक का विमोचन किया। इस पुस्तक में आमतौर पर तथा अक्सर उपयोग होने वाली आयुर्वेदिक औषधियों की सूचना समाविष्ट है।

वैद्य देवेन्द्र त्रिगुणा, निगम सदस्य ने इस दिवस के विषय–''मधुमेह से बचाव तथा नियंत्रण हेतु आयुर्वेद'' के संबंध में अपना वक्तव्य रखा। प्रतिभागियों को आयुर्वेद के माध्यम से मधुमेह का बचाव तथा नियंत्रण पर जानकारी देने सहित ब्रोशर वितरित किए गए। श्री यू. वेंकटेश्वरलू, वित्त आयुक्त तथा श्री जी.पी. श्रीवास्तव, निगम सदस्य ने भी इस अवसर पर अपने संक्षिप्त विचार रखे। श्री वि.एन. त्रिपाठी, मुख्य सतर्कता अधिकारी;

डॉ. एस.एल. विग, डॉ. आर.के. कटारिया तथा डॉ. पी. एल. चौधरी, चिकित्सा आयुक्तों; डॉ. वी.पी. प्रसाद, सलाहकार (आयुष) तथा डॉ. जी. प्रभाकर राव, उप चिकित्सा आयुक्त (आयुष) ने समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया। मुख्यालय, क.रा.बी. निगम के अन्य कार्मिक तथा आयुष चिकित्सक भी समारोह में उपस्थित हुए।

क.रा.बी. निगम के सभी अस्पतालों तथा औषधालयों में राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस चिकित्सा शिविरों, मधुमेह से बचाव तथा नियंत्रण पर व्याख्यानों, पोस्टर प्रदर्शन, ब्रोशर वितरण तथा मधुमेहरोधी जड़ी–बूटियां रोपित करके धूमधाम के साथ मनाया गया।

मुख्यालय, क.रा.बी. निगम ने दिनांक 28.10.2016 को एक्सपो प्रदर्शनी तथा मावलंकर सभागार, कॉन्स्टीट्यूशनल क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय आयुर्वेदिक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक दिवसीय सम्मेलन में क.रा.बी. निगम की सेवाएं तथा आयुर्वेद द्वारा मधुमेह से बचाव तथा नियंत्रण दर्शाता पोस्टर प्रदर्शित करके स्टॉल लगाया। आगंतुकों को ''मधुमेह से बचाव तथा नियंत्रण के आयुर्वेदिक तरीके'' विषय पर हिंदी तथा अंग्रेज़ी में निःशुल्क ब्रोशर भी वितरित किए गए।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती किरण मलहोत्रा, प्रधान निजी सचिव; श्रीमती सुमिता कपूर, वैयक्तिक सहायक; श्री कपिल देव, सहायक और श्रीमती बबली देवी, बहुकार्य स्टाफ ने अपना सहयोग प्रदान किया।

मेरी प्यारी बिटिया

बलराज
प्र०श्रे० लिपिक, उ० क्षे० कार्यालय
क.रा.बी. निगम, जालंधर

मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है ?
इस घर की रौनक है तू, उस घर की रानी है।
मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है ?
इस बगिया का फूल है तू, वो आंगन महकाना है,
इस माली का नाम तुझे, उस आंगन चमकाना है।
मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है ?
इस घर तूने जो कुछ सीखा, वो यहीं रह जाना है,
उस घर की पाठशाला में, शिक्षक नया सबक पुराना है।
मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है ?
उसने तुझको राम दिया जो, वनवास नहीं ले जाना है,
कौशल्या के चरणों में रहना, हर सुख मिल जाना है।
मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है ?
उस घर में जो सास है रहती, उसे माँ तूने बनाना है,
जो तू भी उसे माँ समझे, हर झगड़ा मिट जाना है।
मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है ?
इस घर तेरी सुनयना, कौशल्या के घर जाना है,
भूसुता बनकर रहना तू, ''बलराज'' का मान बढ़ाना है।
मेरी प्यारी बिटिया, किसने कहा तू बेगानी है...

मेरी गोवर्धन परिक्रमा

श्याम सुंदर कथूरिया
उप निदेशक(राजभाषा), मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

भक्त अपनी इच्छा से तो भगवान के घर जाते ही हैं, परंतु कभी-कभी भगवान स्वयं ही भक्तों को अपने घर बुला लेते हैं। ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ, जब अकस्मात मेरा, श्री कृष्ण की नगरी में गोवर्धन परिक्रमा के लिए जाना हुआ। यात्रा पूर्वनिर्धारित नहीं होने के कारण रेल आरक्षण के अभाव में मैंने सड़क मार्ग से सार्वजनिक वाहन से यात्रा करने का निर्णय किया।

दिल्ली से श्री गोवर्धन पर्वत की लगभग 135 किलोमीटर की दूरी सड़क अथवा रेल मार्ग द्वारा पूरी करके पहुंचा जा सकता है। मैं अपनी पत्नी और बेटे के साथ सुबह पौने नौ बजे दिल्ली से रवाना हुआ। हम कोसीकलां होते हुए बरसाना के रास्ते गोवर्धन की ओर बढ़े। सड़क थोड़ी खराब थी परंतु शहर की आपाधापी एवं भागम-भाग से दूर हरे-भरे खेतों में मोर, गौरैया, पपीहे आदि को देख कर मेरा बेटा बहुत खुश हो रहा था। यहां की प्रदूषण रहित स्वच्छ वायु ने शरीर में नई स्फूर्ति का संचार किया। हमने आराम से बीच-बीच में रुकते हुए यह यात्रा सवा चार घंटे में दोपहर 1:00 बजे पूरी की।

मैंने इससे पहले कभी गोवर्धन जी की परिक्रमा नहीं की थी, परंतु संयोग से गोवर्धन जी पहुंचते ही मुझे एक सज्जन अनायास मिल गए, जो पहले चार बार यहां आ चुके थे। संभवतः मेरे मार्गदर्शन के लिए ही भगवान ने उन्हें भेजा होगा। गोवर्धन पर्वत उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के अंतर्गत एक नगर पंचायत है। गोवर्धन व इसके आसपास के क्षेत्र को ब्रज भूमि भी कहा जाता है। पौराणिक मान्यता अनुसार हनुमान जी लंका युद्ध के समय गिरिराज जी को हिमालय से लाए थे। सेतु निर्माण पूर्ण होने की सूचना मिलने पर उन्होंने इसे यहीं पर स्थापित कर दिया तथा दक्षिण की ओर चले गए। दूसरी मान्यता अनुसार पुलस्त्य ऋषि जब इसे द्रोणांचल पर्वत से काशी ला रहे थे, तो पर्वत ने एक शर्त रखी थी कि इसे रास्ते में कहीं भी रखना नहीं है। यदि इसे रख दिया तो यह वहीं स्थापित हो जाएगा। पर्वत का भार बढ़ने के कारण ऋषि ने इस पर्वत को ब्रजभूमि में विश्राम के लिए कुछ देर रख दिया। अपनी शर्त अनुसार जब पर्वत वहीं पर स्थापित हो गया। पुलस्त्य ऋषि ने इसे उठाने का प्रयास किया परंतु यह पर्वत उनसे नहीं हिल पाया। तब पुलस्त्य ऋषि ने इसे श्राप दिया कि तुम यहीं पर तिल-तिल घटकर पृथ्वी में विलीन हो जाओगे। आज से 5000 वर्ष पूर्व लगभग 30000 मीटर की ऊंचाई वाला पर्वत इतना विशाल था कि इसे गिरिराज की संज्ञा दी गई। आज यह 30 मीटर का भी नहीं रह गया है। पहले इसकी परछाई मथुरा तक देखी जाती थी। अब यह केवल कछुए की पीठ जैसा उत्तर से दक्षिण दिशा में लंबाई में फैला दिखता है, यह रोज एक मुट्ठी कम होता जा रहा है। कहीं-कहीं इस पर्वत की ऊंचाई और चौड़ाई इतनी कम है कि आपकी आवाज पर्वत के दूसरी

ओर भी पहुंच जाती है। यह भगवान श्री कृष्ण की लीलास्थली है।

हमने अपनी यात्रा दानघाटी मंदिर से श्रीकृष्ण की विधिवत पूजा कर प्रारंभ की। बताया गया कि इस स्थल पर श्री कृष्ण गोपियों से दुग्ध दान लिया करते थे। सदियों से यहाँ दूर-दूर से भक्तजन गिरिराज जी की

परिक्रमा करने आते रहे हैं। सभी हिंदूजनों के लिए इस परिक्रमा का विशेष महत्व है। वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवमार्गी लोग तो इसकी परिक्रमा अवश्य करते हैं, क्योंकि वे श्री कृष्ण के उस रूप की पूजा करते हैं, जिसमें भगवान ने अपनी उंगली से इस पर्वत को उठाया हुआ है और उनका दायां हाथ कमर पर है। यह 7 कोस की परिक्रमा लगभग 21 किलोमीटर की है। जो चार कोस की बड़ी परिक्रमा और तीन कोस की छोटी परिक्रमा में विभक्त है।

गोवर्धन जी की परिक्रमा का महात्म्य ऐसा है कि इससे सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और घर में धन की कमी नहीं होती।

यूं तो मैं नंगे पांव ही परिक्रमा करने का निर्णय करके यहां आया था, परंतु किन्हीं परिस्थितियोंवश मुझे यह परिक्रमा ऑटो से करनी पड़ी। इसका लाभ यह हुआ कि ऑटो चालक ने एक गाइड की तरह मुझे सारी जानकारी दी। दोपहर के 2:30 बज चुके थे, गर्मी अधिक होने के कारण, फरवरी का महीना होने के बावजूद, हमने अपनी स्वेटर उतार दी। शायद इसीलिए गर्मी के दिनों में यहां श्रद्धालु रात्रि में परिक्रमा करते हैं। नियमानुसार हमने अपनी परिक्रमा घड़ी की सुई की दिशा में अर्थात गोवर्धन पर्वत को दाईं ओर रखते हुए प्रारंभ की। परिक्रमा के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के कुंडों का क्रम भी शुरू हो गया, जैसे– संकर्षण कुंड, गोविंद कुंड, नवल–अप्सरा कुंड, सुरभि कुंड, हरणि कुंड, ललिता कुंड, गुलाल कुंड, गौरी कुंड, कुसुम सरोवर आदि। रास्ते में पर्वत पर दाऊजी का मंदिर भी आया। यात्रा मार्ग में राजस्थान के भरतपुर जिले का 1 किलोमीटर का डीग क्षेत्र भी पड़ा। इसके बाद हम पुंछरी कालोठा पहुंचे। यह श्री कृष्ण के मित्र मधुमंगल का मंदिर है तथा यहां पर प्रत्येक भक्त को उपस्थिति लगाना आवश्यक होता है। इसके पश्चात हमने मुखारविंद के दर्शन किए। यह इस पर्वत का मुख भी माना जाता है। इसे जतीपुरा गिरिराज मंदिर कहते हैं। यहीं श्री कृष्ण ने द्वापर युग में ब्रजवासियों को, इंद्र के क्रोध के फलस्वरूप भारी वर्षा से बचाने के लिए एक छतरी की तरह इसे 7 वर्ष की आयु में 7 दिन और 7 रात तक हनुमान जी के वचनानुसार अपनी कनिष्ठ उंगली पर उठाकर इंद्र का मान मर्दन किया था। तत्पश्चात इंद्र ने पंचामृत से इस पर्वत की पूजा की। मूसलाधार वर्षा की असीम जलराशि से ही ये सभी कुंड पर्वत की तलहटी में चारों ओर बने। हमने यहां विधिवत पूजा की और पंडित जी ने मुझे भगवान का होली वाला अंगवस्त्र देकर कृपा की। आगे चलकर हमने रुद्र कुंड देखा। यहां शिव परिवार ने अन्नकूट महोत्सव के दर्शन किए थे। इसके बाद यहां दंडौती शिला आई। मान्यता है कि जो व्यक्ति इसकी परिक्रमा कर लेता है, उसे पूरी परिक्रमा करने की आवश्यकता नहीं होती।

रास्ते में इस पर्वत पर हमने अनेक प्रकार की वनस्पतियां, जैसे– कदंब, बापटी, शीशम, पीपल, नीम आदि देखीं। यहां पहले कुछ ऐसी वनस्पतियां भी पाई जाती थीं, जो गायों के लिए अच्छी होती थीं। यहां नंद गांव की लगभग 9 लाख गाय चरती थीं, इसीलिए इसका नाम गोवर्धन पड़ा। ऐसी भी मान्यता है कि यह पर्वत गाय के गोबर से भरपूर है, इसलिए इस पर इंद्र के वज्र का भी प्रभाव नहीं पड़ा। इसकी महिमा को देखते हुए ही श्रीकृष्ण ने इंद्र के स्थान पर गिरिराज की पूजा करने के लिए कहा तथा अब लोग इसे कृष्ण का ही रूप मानते हुए इसकी पूजा करते हैं। इस पर्वत पर श्री कृष्ण के चरणों के निशान, सिंदूरी शिला, काजल शिला आदि भी पाए गए हैं। यहां कभी नीलगाय, सियार आदि पशु भी पाए जाते थे, जो बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण के प्रभाव के चलते अब दिखाई नहीं देते ।

परिक्रमा करते हुए ऑटो चालक ने हमें बताया कि यहां पर बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री हो या पुरुष अथवा विदेशी सभी सामान्यतः नंगे पांव सात कोस की परिक्रमा राधे–राधे जपते हुए करते हैं, जो लगभग 3 से 6 घंटे में पूर्ण हो जाती है। कुछ लोग दंडवत प्रणाम करते हुए इसकी परिक्रमा करते हैं, जो लगभग 6 से 7 दिन में पूर्ण होती है। कुछ भक्त 108 कंकड़ों के साथ एक ही स्थान पर 108–108 बार दंडवत लगा कर आगे बढ़ते हुए इसे पूर्ण करते हैं। इसमें लगभग सात वर्ष का समय लगता है। कुछ श्रद्धालु सवा या डेढ़ मन दूध की धार के साथ परिक्रमा करते हैं। यहां कुछ भक्त प्रतिदिन परिक्रमा करते हैं। कुछ लोग रिक्शे या ठेले पर बैठकर परिक्रमा करते हैं।

यात्रा मार्ग में बंदरों की भी कमी नहीं थी। ये बंदर खाने–पीने की चीजों, थैलों, चश्मों आदि पर झपट्टा मार रहे थे। हमारे हाथों से भी इन्होंने बेर से भरी थैली छीन ली। अतः इनसे सावधान रह कर चलना पड़ता है। यहां

पड़ाव–पड़ाव पर विश्रामस्थल, छबील, लंगर आदि पर सेवादार मिलेंगे। यहां भजन–कीर्तन करती हुई मंडलियां भी देखी जा सकती हैं। यहां सैंकड़ों निराश्रित महिलाओं को दान देते भक्त भी दिखे। इसके आगे हमने राधा एवं श्याम कुंड में विधि–विधान के साथ सपरिवार पूजा की। इसके बाद हम मानसी गंगा गए। श्री कृष्ण ने इसे मन से प्रकट किया था, इसलिए इसका नाम मानसी गंगा पड़ा। कथा है कि श्री कृष्ण के सखा के हाथों गाय की मृत्यु होने के कारण पाप से मुक्ति दिलाने के लिए श्री कृष्ण ने यहीं गंगा जी को लाकर सखा को गंगा स्नान कराया।

इस प्रकार राधे–राधे की गूंज से सराबोर हमारी भक्तिमय तीर्थयात्रा लगभग ढ़ाई घंटे में उसी दान घाटी पर आकर संपूर्ण हुई, जहां से हमने इसे प्रारंभ किया था।

यहां आकर मुझे सूरदास, रहीम, रसखान, केशव, घनानंद, वियोगी हरि जैसे महान ब्रज कवियों की भाषा के लालित्य एवं माधुर्य का रसास्वादन स्थानीय लोगों की बोली में सुनने को मिला। वाणी में ऐसी मिठास किसी महानगर में देखने को नहीं मिलती। यहां एक रिक्शे वाले से लेकर बड़े होटल वाला और विदेशी भी राधे–राधे कहते मिले। श्री गिरिराज जी की इस परिक्रमा से मुझे ज्ञात हुआ कि परिक्रमा शब्द का अर्थ किसी केंद्र का चक्कर लगाना मात्र नहीं है, अपितु यह सौरमंडल की भांति भगवान एवं भक्त के बीच अटूट बंधन का भाव है। यह अपने आराध्य को केंद्र में रखकर उसके इर्द–गिर्द रहने का भाव है और प्रेम का परिचायक है। यह अपने प्रभु के प्रति समर्पित होकर एकाकार होने जैसा है। श्रद्धा और उत्साह से परिपूर्ण इस चिरस्मरणीय यात्रा का अनुभव केवल शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस भक्तिरस का पान तो श्री गोवर्धन जी की शरण में ही जाकर किया जा सकता है।

राधे–राधे!

(लेखक ने यह यात्रा वृतांत दिनांक 23.02.17 को आकाशवाणी के राजधानी चैनल पर ब्रज माधुरी कार्यक्रम में प्रस्तुत किया।)

भगवान

हेमंत कुमार आसीवाल,
ई.सी.जी. तकनीशियन,
क.रा.बी. निगम अस्पताल, मानेसर

सबसे बड़ा सवाल है, कहाँ है भगवान,
कैसा है भगवान ?
धर्म, जाति, भाषा के आधार पर सबके
अलग–अलग भगवान हैं।
सबके अलग–अलग तर्क हैं।
मेरे अनुसार भगवान................
भूखे को खाना दे, वो है भगवान
नंगे को कपड़ा दे, वो है भगवान
रोते को हंसाए, वो है भगवान
दुःख में भी साथ दे, वो है भगवान
बुजुर्गों की सेवा करे, वो है भगवान
अनाथ को सहारा दे, वो है भगवान
बिछड़ों को मिलाए, वो है भगवान
मंदिरों में दान देने वाले बहुत हैं
लेकिन गरीब को दान दे, वो है भगवान
मरने के बाद शरीर दान दे, वो है भगवान
ज्ञान देने वाले ज्ञानी तो बहुत है
लेकिन बेसहारों को आसरा दे, वो है भगवान
बेजुबान जानवरों का दर्द समझे, वो है भगवान
''हर किसी के बस में नहीं है भगवान बनना
लेकिन हो सके तो एक अच्छा इंसान बनो''।।

हमारे मन में राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। – वियोगी हरि

निगम मुख्यालय में राजभाषा गतिविधियाँ

दिनांक 14 सितंबर, 2016 को 'पंचदीप भारती' के बारहवें अंक का विमोचन करते हुए मुख्यालय के अधिकारी।

दिनांक 10 मार्च, 2017 को निगम मुख्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला में प्रतिभागी (बाएं) को प्रमाणपत्र देते हुए बीमा आयुक्त (मध्य) तथा अतिथि वक्ता (दाएं)।

दिनांक 29 मार्च, 2017 को श्री स्वदेश कुमार गर्ग, बीमा आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित निगम मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 158वीं बैठक का दृश्य।

निगम कार्यालयों में

हिंदी भाषा उस समृद्ध जलराशि के सदृश है, जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों। – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

हिंदी दिवस समारोह

दिनांक : 14 सितम्बर 2016
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
हिन्दी दिवस समारोह
ESIC
SOCIAL SECURITY
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा
राजभाषा पखवाड़ा
हिन्दी दिवस समारोह
हार्दिक अभिनन्दन
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

निगम कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियाँ

भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिंदी है। – नलिन विलोचन शर्मा

क.रा.बी. निगम के लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम में फोनेटिक हिंदी टंकण

बिनय कुमार शुक्ल
क.हिं.अनुवादक, उ.क्षे.कार्यालय
क.रा.बी. निगम, बैरकपुर

राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में अन्य विभागों की अपेक्षा कर्मचारी राज्य बीमा निगम में अनुपालन का स्तर काफी बेहतर है। जब से हिंदी टंकण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग होना शुरू हुआ तब से इस क्षेत्र में काफी तेज़ी आई है। इस लेख में कम्प्यूटर पर हिंदी के प्रयोग से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर मैं चर्चा करूँगा।

सबसे पहले कुछ सूक्ष्म जानकारी साझा करता हूँ। कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण के लिए दो प्रकार के की–बोर्ड (Key-Board) का प्रयोग किया जाता है। पहला है इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड जिसमें सरल पद्धति से हिन्दी टंकण किया जाता है। इस की–बोर्ड में दाहिने तरफ व्यंजन होते हैं तथा बाईं तरफ स्वर(मात्रा)। टंकण करते समय तदनुसार व्यंजन एवं मात्रा का चुनाव किया जाता है। इस प्रकार के की–बोर्ड का प्रयोग करते हुए टंकण सीखना बहुत ही आसान है। कुछ घंटों के अभ्यास से इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड पर आसानी से टंकण सीखा जाता है। भारत सरकार द्वारा इस की–बोर्ड का पेटेंट करवाया गया है तथा एक ही की–बोर्ड के प्रयोग से आप भारत की अनेक भाषाओं में टंकण कर सकते हैं। भारत सरकार के निदेशानुसार पत्राचार के माध्यम से सरकारी सेवा में संलग्न अधिकारी एवं कर्मचारी यह प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। नियमानुसार उन्हें प्रशिक्षण उत्तीर्ण करने पर प्रोत्साहन राशि दिए जाने का प्रावधान है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट पर इस प्रशिक्षण से संबंधित अध्ययन सामग्री भी उपलब्ध है। कार्मिक यदि चाहें तो इसे डाउनलोड कर अभ्यास कर सकते हैं।

दूसरा की–बोर्ड है 'फोनेटिक'। फोनेटिक से तात्पर्य है अंग्रेज़ी के जिस अक्षर से हिंदी के जिस अक्षर की प्रतिध्वनि होती है वही दबाने से हिंदी के अक्षर टंकित हो जाएंगे। इसे लिप्यंतरण कहा जाता है। जैसे क लिखने के लिए K दबाएं, kh से ख, इस प्रकार अन्य अक्षर लिखे जा सकते हैं। गूगल का googleIME नामक ऐप गूगल से, माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल माइक्रोसॉफ्ट की वेबसाइट या www.bhashaindia.com से डाउनलोड कर विंडो ऑपरेटिंग सिस्टम वाले कम्प्यूटर में हिंदी तथा अन्य कई भाषाओं में टंकण किया जा सकता है। भाषा इंडिया से डाउनलोड करने के पूर्व अपने कम्प्यूटर के ऑपरेटिंग सिस्टम एवं उसकी प्रोपर्टी(कितने बिट का है) जान लें एवं तदनुसार ऐप डाउनलोड कर लें।

ये दोनों की–बोर्ड यूनिकोड प्रणाली पर आधारित हैं। कम्प्यूटर में विभिन्न भाषाओं में टंकण करने के लिए एक विशेष प्रकार की कोडिंग प्रणाली है जिसके कारण एक कम्प्यूटर में प्रयुक्त फॉण्ट को दूसरे कम्प्यूटर में बिना किसी अन्य सॉफ्टवेयर या फॉण्ट के प्रयोग के भी देखा जा सकता है। इस प्रणाली में प्रयुक्त फॉण्ट ओपन टाइप फॉण्ट कहे जाते हैं।

यूनिकोड इनकोडिंग के पूर्व विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर के माध्यम से हिंदी भाषा में टंकण का कार्य

किया जाता था। इस प्रकार के सॉफ्टवेयर से सम्बद्ध फॉण्ट जिस कम्प्यूटर में हैं, उस फॉण्ट में टंकित विवरण उसी कम्प्यूटर में देख सकते हैं। जिसमें यह फॉण्ट नहीं है उसमें या तो जंक के रूप में दिखेगा या फिर फाइल खुलेगी ही नहीं। लीप ऑफिस, योगेश जैसे कई सॉफ्टवेयर पूर्व में प्रयोग में थे। वर्तमान में भी कृतिदेव, श्री लिपि, चाणक्य इत्यादि कई ऐसे फॉण्ट हैं। इन्हें ट्रू टाइप फॉण्ट कहा जाता है।

चूँकि निगम में प्रयोग किए जाने वाले अधिकांश कम्प्यूटर लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम के सुशे प्रणाली पर्टिक्युलर आधारित हैं, अतः इन पर गूगल या माइक्रोसॉफ्ट के हिंदी टूल प्रभावी नहीं हैं। कुछ कार्यालयों में कृतिदेव का प्रयोग कर टंकण का काम किया जाता था पर इसके साथ भी वही समस्या है। यदि कृतिदेव में टंकित सामग्री को मेल द्वारा या अन्य माध्यम से सॉफ्ट कॉपी के रूप में साझा किया जाए तो जिनके साथ साझा किया गया है, उनके कम्प्यूटर में इस फॉण्ट का इंस्टाल होना आवश्यक है।

इन सभी समस्याओं से निजात पाने के लिए निगम के राजभाषा प्रभाग के सहयोग से लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए यूनिकोड का विकास किया गया। यह फोनेटिक आधारित ऐप्लिकेशन है तथा यदि कुछ कमियों को अनदेखा करें तो भारत की अनेक भाषाओं में एक साथ टंकण करने की सुविधा से युक्त है। यह अपने आप में अद्वितीय है। इसके अलावा इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड की सुविधा तो पहले से ही लिनक्स के कम्प्यूटरों में उपलब्ध है ही। चूँकि लिनक्स अपने आप में एक अनोखा ऑपरेटिंग सिस्टम है, अतः इसका यूनिकोड भी प्रारम्भ में काफी असुविधाएं देता है।

नीचे की कुछ पंक्तियों में हम जानेंगे कि व्यंजनों एवं मात्राओं से संयुक्त शब्दों को कैसे टंकित किया जाता है। आपके कम्प्यूटर में यूनिकोड है या नहीं इसे जानना आवश्यक है। इसके लिए सबसे पहले कोई भी ब्लैंक डॉक्यूमेंट खोलें। डॉक्यूमेंट के सबसे ऊपरी कोने में gX लिखा हुआ होगा (चित्र में देखें)। कई बार यह दाहिने तरफ भी होता है।

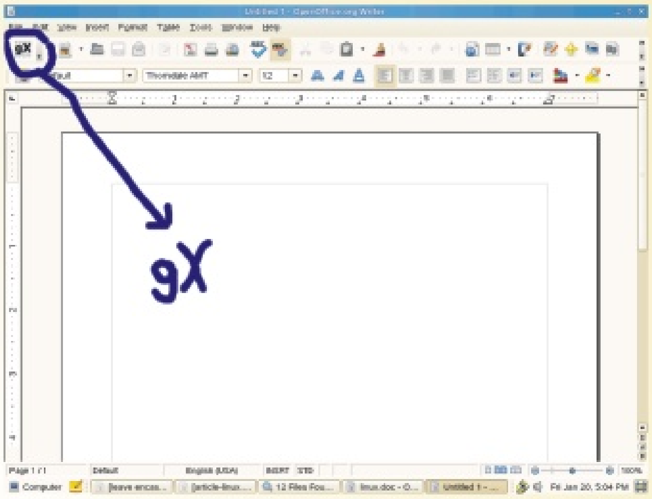

यदि gX नहीं है तो इसे देखने या ऐक्टिवेट करने के लिए View मेन्यू पर्टिक्युलर क्लिक करें। फिर टूलबार पर क्लिक करें। अगला जो विंडो खुलता है उसमें देखें GXLiterate लिखा होगा। उसे टिक करें। आपके कम्प्यूटर में gX एक्टिवेट हो जाएगा। इसके साथ ही कई बार एक बॉक्स उभर कर आता है। यदि नहीं आया तो gX पर क्लिक करें, एक बॉक्स आएगा(चित्र देखें)।

इस बॉक्स के Proxt Host में 10.10.17.25 भरें, Prox-Port में 3128 तथा अपनी पसंद की भाषा चुनें। Proxy Required एवं Transliteration Enabled के बॉक्स में क्लिक करें, उसके बाद सेव एन्ड क्लोज करें। इसके साथ ही अब आपका कम्प्यूटर लिप्यंतरण के लिए तैयार है। अंग्रेजी की–बोर्ड से टाइप किए हुए शब्द आप द्वारा चुनी हुई भाषा में लिप्यन्तरित हो जाएंगे।

यह प्रक्रिया तब कारगर होगी, जब आपके कम्प्यूटर में यूनिकोड ऐप्लिकेशन इन्स्टॉल किया हुआ हो। यदि आपके कम्प्यूटर में यूनिकोड का फोल्डर नहीं है तो view-->toolbar- में GxLiterate नहीं आएगा। इसे अपने कम्प्यूटर में डालने के लिए Toolbar पर क्लिक करें। अगले बॉक्स में Extension Manager आएगा। इस पर क्लिक करें, अगले बॉक्स में देखें। इसमें GxLiterate दिखाई देगा। उस पर क्लिक कर इनेबल करें। यदि नहीं है तो ऐड बटन पर क्लिक करें। फिर बैकअप फोल्डर में जाएं तथा यूनिकोड फोल्डर पर क्लिक करें। इसमें GxLiterate फोल्डर पर क्लिक करें तथा उसे जोड़ने दें(चित्र देखें)।

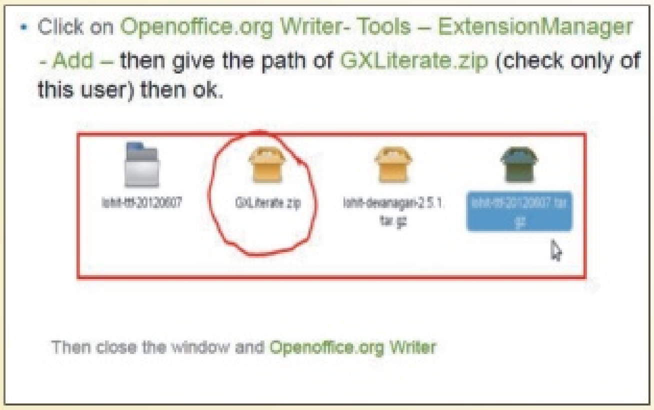

(यदि आपके कम्प्यूटर में यूनिकोड फोल्डर नहीं है तो अपने कार्यालय के IT सहायक से यूनिकोड इंस्टॉल करने के लिए कहें तथा उन्हें यह प्रक्रिया करने के लिए कहें।)

जैसे ही आपके कम्प्यूटर में GxLiterate Add होगा, अगले क्षण एक बॉक्स उभर कर आएगा। इस बॉक्स में Proxt Host, Proxy Port आदि विवरण भरें (चित्र संख्या–2 देखें) और सेव एण्ड क्लोज़ बटन क्लिक करें तथा उक्त डॉक्यूमेंट को बंद कर दें। अपने कम्प्यूटर को एक बार रीस्टार्ट कर लें। बस आपके कम्प्यूटर में Gx सक्रिय हो गया। अब आप इसमें हिंदी टंकण का कार्य कर पाएंगे।

आप एस.एम.एस. के प्रारूप में (रोमन लिपि में) लिखते जाएँ और स्पेस बार दबाते जाएं। स्वतः ही शब्द लिप्यन्तरित होकर हिंदी अथवा जिस भाषा का आपने चयन किया है, उसमें लिप्यंतरण संभव हो जाएगा।

कई बार हम कुछ लिखना चाहते हैं, पर बार–बार प्रयास के बाद भी शब्द नहीं मिल पाता है। ऐसी स्थिति में कंट्रोल बटन(Ctrl) दबाकर दाहिने तरफ की ऐरो (Arrow) की (Key) का प्रयोग कर कुछ वैकल्पिक शब्द देख सकते हैं। विंडोज के फोनेटिक ऐप (Indic language input tool) के समान ही इसमें भी शब्दों के चार ऑप्शन मिलते हैं। उदाहरण के लिए एक शब्द लिखा sita। हिंदी में इसका लिप्यंतरण आएगा सीता। मान लेते हैं कि हम सीता किसी और रूप में लिखना चाहते हैं तो Ctrl और राइट एरो की दबाएं और देखें सीट, सिता, सित चार विकल्प मिलेंगे। आवश्यकतानुरूप आप इनमें से किसी एक शब्द का चयन कर सकते हैं। लेफ्ट और राइट की का प्रयोग कर आप इस प्रकार की समस्या का निवारण कर सकते हैं (ऐरो की के लिए चित्र देखें)।

कुछ संयुक्ताक्षर निम्नलिखित तरीके से लिखे जा सकते हैं:– क्ष–ksh. क्ष–kshe, त्र–tr या tra, ज्ञ–gya लिखकर राइट ऐरो की दबाकर अक्षर का चयन करें।

टेबल या बॉक्स बनाकर यदि हम उसमें इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर लिखना चाहें तो लिप्यंतरण नहीं होता है। इसके लिए निम्नलिखित विधि का प्रयोग किया जाए –

जितने कॉलम की आवश्यकता है, उतने वाक्य या शब्द लिखते जाएं और हर वाक्य/शब्द के बाद Comma(,) चिह्न लगाते जाएँ नीचे उदहारण देखें :–

क्रम सं, नाम, पदनाम, तैनाती का स्थान, तैनाती की तारीख

फिर पूरी टंकित सामग्री को सेलेक्ट करें और इसके बाद मेन्यू बार में Table मेन्यू पर क्लिक कर Convert पर जाएंगे तथा Text to Table पर क्लिक करें। अगले बॉक्स में others का चयन करें और फिर ओके कर दें। टंकित सामग्री अपने आप बॉक्स में आ जाएगी। नीचे की तालिका में देखें।

क्रम सं	नाम	पदनाम	तैनाती का स्थान	तैनाती की तारीख

इस प्रक्रिया में बस एक बात का ध्यान रखें, बॉक्स में लिखने वाली समस्त सामग्री को पहले उक्त विधि से टाइप कर लें फिर बॉक्स में बदलें। यदि आप इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड का प्रयोग करते हैं तो यह समस्या नहीं आती है। मात्र फोनेटिक की–बोर्ड के प्रयोगकर्ता को यह समस्या होती है।

अपने कम्प्यूटर में इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड ऐक्टिवेट करने के लिए लिनक्स कम्प्यूटर में निम्नलिखित विधि अपनाएं :–

पहले स्क्रीन के निचले हिस्से में दाहिने कोने पर Computer पर क्लिक करें, उसके बाद Control Centre पर क्लिक करें। अगली स्क्रीन पर Keyboard खोलें, फिर Layout पर क्लिक करें। Layout के ऑप्शन में Keyboard Model लिखा मिलेगा, उसमें Advance Scorpious Ki का चुनाव करें। इसके बाद एक Add बटन दिखाई देगा, उस पर क्लिक करें। बाईं तरफ की–बोर्ड का ऑप्शन आएगा। इस ऑप्शन में India पर क्लिक करें, आगे समस्त भाषाएं आ जाएंगी। हिंदी ऑप्शन पर क्लिक करें। इसमें आने वाले ऑप्शन में से Hindi Inscript चुनें। (असुविधा की स्थिति में कार्यालय के IT सहायक को ये स्टेप दिखाएं और उनसे ऐक्टिवेट करवा लें।) बस अब हिन्दी इन्स्क्रिप्ट का प्रयोग करने के लिए Alt Key दबा कर भाषा बदल सकते हैं। बस एक बात का ध्यान रखें, जब इन्स्क्रिप्ट की–बोर्ड का प्रयोग कर रहे हों तो उस समय gX ऑप्शन में से ट्रांसलिटरेशन का ऑप्शन बंद कर दें।

कई बार हम हिन्दी में सामग्री टंकित करते हैं पर इसे जब किसी को मेल द्वारा भेजते हैं तो उस व्यक्ति के कम्प्यूटर में जंक के रूप में खुलता है। इस असुविधा के निवारण के लिए जब भी टाइप करें तो मंगल फॉण्ट का चयन करें। चूँकि मंगल फॉण्ट ओपन टाइप फॉण्ट है अतः पूरे विश्व में मंगल फॉण्ट में टाइप की गई सामग्री पढ़ी जा सकेगी।

इतनी सारी खूबियों के बाद भी लिनक्स में हिन्दी टंकण में कुछ असुविधा आएगी ही, पर हताश न हों, इन्सर्ट एवं कॉपी पेस्ट की प्रक्रिया से काम करते जाएँ। कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत ही आसान है बस एक छोटा सा प्रयास कर देखिए तो सही। कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण संबंधित तकनीकी सहायता के लिए आप सीधे मुझसे मेरे मोबाइल नंबर 91–7359426089 पर फोन कर सकते हैं।

यह जीवन क्या है?

मधु कौशिक
सहायक निदेशक, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?
कहते हैं पानी का बुलबुला है जीवन
नन्ही–सी ज़िंदगी है जीवन
कुछ करके दिखाना है तो दिखा तू
पता नहीं कब खो जाए इस दुनिया में
ढूँढ़ने से भी न मिल पाना होना
कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?
देखती हूँ चारों ओर तो
दिखता है दिखावा ही दिखावा
दिखाने को ही दिखाने का
नहीं रे नाम है जीवन
कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?
जब दुनिया में आए हैं तो
अपना अस्तित्व न मिटाना होगा
कुछ ऐसा कर जाओ जिंदगी में
मर कर भी अमर हो जाओ तुम
जिंदगी में बहुत कुछ पाया है,
गंवाया है
जिंदगी को भी जी कर जाओ तुम

कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?
राह लम्बी है सफर थोड़ा है
थक कर न बैठ जाओ तुम
अभावों से ग्रस्त लोगों का
बन जाओ सहारा तुम
उदास होंठों की बन जाओ मुस्कान तुम
किसी की लो मिसाल तुम
किसी की बन जाओ मिसाल तुम
कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?
हँसी का नाम है जीवन
गमी का नाम है जीवन
मुसीबतों को है जिसने झेला
शायद उसी का नाम है जीवन
कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?
मेरे इन विचारों का
उपहास न हरगिज करना तुम
किसी के मन को ठेस पहुँचाने का
नहीं रे नाम है जीवन
कभी–कभी अनचाहे ही सोचती हूं
जीवन क्या है ?

ट्रेन से ऑफिस

सीता रानी
बहुकार्यस्टाफ, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

ऑफिस पहुंचने की जल्दी में
अक्सर देर हो जाती है हमें
दो पग की दूरी में
ट्रेन छोड़ जाती है हमें
हम देखते रह जाते हैं
देखते ही देखते
आँखों से ओझल हो जाती है
फिर इंतज़ार और इंतज़ार
निगाहें घड़ी की सुई पर टिक जाती हैं
समय रफ्तार लेता है
हमें घबराहट देता है
करीब आधे घंटे के पश्चात
रेल आती है
सभी रेल में बैठ जाते
सोचते हैं कि ऑफिस पहुंच जाएंगे
करते हैं इंतज़ार ट्रेन के चलने का
पर; चलती ही नहीं, आगे बढ़ती ही नहीं
घबराहट दिल में होती है
कहीं देर न हो जाए
अधिकारी की डांट न पड़ जाए
साथ बैठे लोग आपस में बात करते हैं
आधे घंटे बाद, दूसरी ट्रेन आती है
तभी भगदड़ मच जाती है
कुछ लोग पहली ट्रेन में आते, कुछ दूसरी में
यह सोच कर कि पहले ये जाएगी
या पहले वो जाएगी
इसी कश–म–कश में पहली ट्रेन निकल गई
हम दूसरी ट्रेन में बैठे रह गए
अब फिर वही इंतज़ार
समय देखा तो साढ़े नौ बज गए
बस एक ही स्टेशन दूर जाना
जैसे बन गया देरी का बहाना
कुछ देर बाद ट्रेन चली
आगे बढ़ी, फिर रुक गई
देखा कि तीसरी ट्रेन बड़ी तेज़ी से आई
और देखते ही देखते चली गई
हम वहीं बैठे रह गए, कुछ देर बाद ट्रेन चली
जैसे–तैसे गंतव्य तक पहुंचे
राहत की सांस ली और ऑफिस पहुंचे।

परिधान

गरिमा पांडे
निजी सचिव
क.रा.बी. निगम, मुख्यालय दिल्ली

हम सभी इस बात से परिचित हैं कि **परिधान हमारी सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं।** एक कहावत सदियों से चली आ रही है कि ''मन सुन्दर तो तन सुन्दर'' लेकिन कई औपचारिक मौकों पर हमारी पहचान हमारी पोशाक से ही होती है। "Ensemble" अंग्रेज़ी का एक ऐसा शब्द, जिसमें ऐथनिक वियर, फुटवियर, एक्सेसरीज एवं सभी फैशन संबंधी चीज़ों का आकलन होता है। मैं इस लेख में परिधानों की विविधता से आपकी पहचान करवाना चाहती हूँ, जिन्हें हम रोजमर्रा में पहनते तो हैं लेकिन उनका औपचारिक नाम नहीं जानते। 'ऐथनिक वियर' वस्त्रों का एक भारतीय पारंपरिक वर्ग है, जिसमें भारतीय महिलाओं और पुरुषों की वेष–भूषा का समावेशन है।

मैं समझती हूँ कि भारत को विविधताओं का देश यूं ही नहीं कहा जाता। उनमें से एक कारण यहाँ के परिधानों की विविधता भी है। इसके अलावा रंगों की विविधता, वस्त्रों की बनावट, उनकी काट, फिटिंग आदि कारक उनमें चार चाँद लगा देते हैं।

हमारे देश के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भांति–भांति की पोशाकों की झलक दिखती है। पंजाब में सलवार–कुर्ता एवं पटियाला सूट, राजस्थान का लहंगा–चोली, तमिलनाडु का पावाडै–साड़ी आदि प्रचलित हैं।

पूर्वोत्तर भारत के विशिष्ट ऐथनिक परिधानों में असम की मेखला–चादर, मेघालय की जेम्फांग और कमरबंद वाली धोती बहुत ही प्रचलित हैं। वहां खासी महिलाएं त्योहारों पर विशिष्ट परिधान पहनती हैं। पूर्वोत्तर भारत की वेशभूषा में नागालैंड की चर्चा न हो तो कुछ अधूरा सा लगता है। विभिन्न प्रकार की शॉल उनकी खास पहचान हैं।

राजस्थान को तो ''रंगीलो राजस्थान'' कहा ही इसलिए जाता है कि वहाँ के पारंपरिक परिधान बड़े रंग–बिरंगे होते हैं। स्त्रियाँ लहंगा–चोली और ओढ़नी पहनती हैं जिनमें कांच के टुकड़े जड़े होते हैं। संपन्न परिवारों के वस्त्रों में तो सोने–चांदी की जरी का भी काम होता है।

राजस्थान की तरह ही गुजरात को भी विविध रंगीन पहनावे के लिए जाना–माना जाता है। दशहरे पर महिलाओं द्वारा पहने जाने वाली चनिया और चोली वेश–भूषा प्रमुख है जो कि संसार भर में प्रचलित है।

साड़ी महिलाओं का सबसे आकर्षक और प्रभावी परिधान माना जाता है, जिसका प्रचलन प्रायः संपूर्ण भारत में है। विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न अवसरों पर या विभिन्न आयुवर्ग में इसे बाँधने की कला में अंतर मिलता है। वैसे ही अनारकली सूट महिलाओं की पोशाक का एक अदभुत रूप रहा है। यह एक लंबे फ्रॉक शैली से बना हुआ एक स्लिम फिट परिधान है, जो कि पाकिस्तान एवं मध्य पूर्व

में पहना जाता है और हमारे देश के अनेक हिस्सों में भी काफी प्रचलित है। हमेशा परिपाटी में रहने वाली यह पोशाक बहुत ही खूबसूरत लगती है।

जैन्ट्स सूट पुरुष परिधानों में सबसे प्रचलित पोशाक है। सूट का अर्थ है एक ही कपड़े से बना हुआ सैट जिसमें एक जैकेट और एक पैंट होती है। **लाउंज सूट** जिसमें कि रंग और स्टाइल दोनों एक ही सोबर रंग में होता है। **कोओरडिनेट सूट** जिसमें कि जैकेट और पैंट अलग अलग रंग के कॉम्बो में होते हैं।

नेहरू जी से लेकर मोदी जी तक भारतीय पुरुषों के पारंपरिक परिधानों में सदरी, वास्कट, जवाहरकट बहुत लोकप्रिय हैं। यह ऐसा परिधान है जिसे भारतीय (कुर्ता–धोती, कुर्ता–पजामा) के साथ ही नहीं, जींस शर्ट के साथ भी पहनते हैं।

पजामा भी अनेक रूपों में मिलता है। साधारण कलीवाला, अलीगढ़कट, चूड़ीदार, लाहौरी, अफगानी आदि रूप अलग–अलग क्षेत्रों के लोगों में प्रचलित हैं। अलीगढ़ी पजामे के साथ गहरे रंग की शेरवानी और ऊँची टोपी एक समुदाय विशेष के ''ऐथनिक वियर'' में बहुत आकर्षक लगती है।

साफा या पगड़ी राजस्थानी पुरुषों की ख़ास पहचान है। इसे कहीं पग्गड़ भी कहा जाता है। राजस्थानी पुरुष धोती–कुर्ता और अंगरखा पहनते हैं। इसी तरह गुजरात में पुरुषों के चोरणो और केवियो सारे संसार के गुजराती पहनते हैं। केवियो पुरुषों का एक तरह का विशेष प्रकार का कोट होता है, जो चूड़ीदार पजामे के साथ पहना जाता है।

अब बदलते जमाने में बदलते फैशन के साथ धीरे–धीरे पश्चिमी वस्त्र अपनाए जाने लगे हैं, किंतु पारंपरिक त्योहारों, सांस्कृतिक उत्सवों में लोग अपने पारंपरिक परिधान ही पहनते हैं।

अंत में आप फैशन के लिए क्या पोशाक खरीदते हैं या आप पोशाक को किस शैली में पहनते है यह आपके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। अच्छी ड्रेसिंग सेंस का होना शिष्टाचार का रूप है।

तमाचा

सपना मांगलिक
साहित्यकार
कमला नगर, आगरा

'अ' और 'ब' दोनों पति–पत्नी हैं। 'अ' जब देखो तब 'ब' को प्रताड़ित करता रहता है। कभी–कभी जरा सी बात पर 'ब' पर हाथ भी उठा देता है। 'ब' अपने बच्चों के लिए खामोश रहती है। शायद वह बच्चों को खराब घरेलू माहौल नहीं देना चाहती। मगर 'अ' इसे उसकी लाचारी या कमजोरी समझ मन ही मन अपने पुरुषत्व पर गर्व करता है। एक बार 'अ' और 'ब' किसी शादी समारोह से लौट रहे थे। रास्ते में कुछ गुंडों ने उन्हें घेर लिया। 'अ' डर के मारे उन गुंडों के सामने गिड़गिड़ाने लगा और गुंडों को अपने करीब आते देख 'ब' के पीछे छिप गया। 'ब' ने चालाकी से अपनी साड़ी के पल्लू में से मोबाइल में लगा इमरजेंसी अलार्म शुरू कर दिया। अचानक तेज आवाज़ में बजती पुलिस सायरन की आवाज़ से गुंडे डर गए और भाग निकले। गुंडों के जाने के बाद 'अ' जो अब तक 'ब' के पीछे छिपा हुआ था। बाहर निकलकर आया और दोनों वापस घर की ओर लौटने लगे। घर आकर 'अ' बार–बार अपने गाल को सहला रहा था। शायद किसी अदृश्य तमाचे की चोट उसके चेहरे पर बार–बार उभर कर आ रही थी ।

आंसू दिल की जुबान हैं

उमाशंकर मिश्र
सहायक, उ.क्षे.कार्यालय
क.रा.बी. निगम, वाराणसी

सभी के दिन फिरते हैं। घरों से फैंके हुए कूड़े भी किसी इंसान के सिर पर चढ़कर ही गन्तव्य स्थान तक जाते हैं। उजड़ा हुआ चमन, सूखते तालाब, जलाशय, झरने, नदियां, लुप्त होती प्रजातियों के कुछ बचे हुए परिन्दे, कटते हुए पेड़ और सूखे हुए पेड़, मुरझाये हुए पौधे, विलुप्त होती जीव–जंतुओं की प्रजातियां आज कुछ बात करना चाहती थीं।

लंबी पंक्तियों में, धूप, बरसते हुए बादलों के नीचे, शुष्क मौसम और कंपकपाते हुए जाड़े में क्या इंसान इसलिए वोट देता है कि प्रकृति का सर्वनाश हो जाए। क्या काम है उच्च वर्ग का, भ्रष्ट लोगों का, विभिन्न प्रकार के फर्जी एनजीओ का काम सबको मालूम है, देश को लूटना। ये तो एसी में और चौदहवीं मंजिलों के आलीशान फ्लैटों में रहते हैं। इन्हें क्या मालूम कि प्रकृति क्या है, किसान क्या है। खेत क्या है और खेती इत्यादि से मतलब ही क्या है। बासमाती चावल आसानी से इन्हें व्यापारी दे देते हैं और उसके बदले मिलावट करके व्यापारी अपनी कीमत वसूल लेते हैं।

प्रतीत हो रहा था मानो जलवायु इन भ्रष्ट लोगों से कहना चाहती थी कि शर्म करो, हमारे अंदर के परिवर्तन से तुम्हारे अंदर वो परिवर्तन होगा कि सब कुछ भूल जाओगे। भूकम्प के एक ही झटके से चौदहवीं मंजिल के फ्लैट ज़मीं–दोज़ हो जाएंगे। आलीशान ज़िंदगी खाक में मिलते देर नहीं लगती है। चेत जाओ, चेतना ही इंसान का आभूषण है और सतर्कता ही लोकतंत्र का प्राण है।

बहुत हो चुका अब प्रकृति का मखौल नहीं होगा। झरने के पास बैठा शंकर रो रहा था। उपवास का तीसरा दिन था। दुकान टूट चुकी थी और थोड़ी–सी ज़मीन, फोर–लैन्ड के नाम पर अधिगृहीत कर ली गई थी। 8700 पेड़ काटे जा चुके थे। कोई जापान के क्योटो सीटी की बात कर रहा था। कोई स्वर्ग को जमीन पर लाने की। ये भ्रष्टाचारी तो ज़िन्दगी को मज़ाक बना चुके थे।

मैं यह मामला ऊपर तक ले जाऊंगा। ये धुंधली तस्वीर उसके सामने आई। वो नवीन की थी, ये पढ़ाई के वक्त भी बहुत मदद करता था। जब शंकर की पढ़ाई गरीबी के कारण बंद हो गई थी, पागलों की तरह नवीन शंकर को खोज रहा था। तब तक शंकर उदयपुर से वाराणसी आ चुका था।

बहुत सोच समझकर शंकर सुधा के घर की ओर चल पड़ा। वह अधिवक्ता थी और गरीबों के लिए दो कदम चल पड़ती थी। रमजान का पवित्र महीना था। चलो यह बताएं कि मैडम जो कुछ आप देंगी सत्तर गुना उसका आपको मिलेगा, वैसे दो बूंद आंसुओं के सिवा उसके पास था ही क्या। आज तक शंकर ये नहीं समझ पाया था कि कहीं से कोई सामान लिया जाता है तो वहां कमी हो जाती है। पानी का स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। लेकिन गिरने के बाद ये कमबख़्त आंसू कहां से वापस आ जाते हैं।

शंकर अब फूट–फूट कर रो रहा था। भूख ज़ोरों से लगी थी।

वाराणसी के दशाश्मेघ घाट पर कुछ अच्छे धनी लोग गरीबों को खाना बंटवाते हैं। शंकर ऊधर ही चल पड़ा और अधिवक्ता का मकान भी उधर ही था।

जी मुझे भी खाना दे दें। शंकर आंसू पोंछता हुआ खाना बांटने वाले से बोला। नए हो, कहां से आए हो बेटा, बस शंकर की आंखें अब बरसने लगीं। ये आंसू तो दिल की जुबान होते हैं। बेटा जाओ उस नल पर हाथ–मुँह

अच्छी तरह धोकर आओ। तुम यहां रोज़ आना। तुम्हारे अंदर एक ऐसा जज़्बा है, जिसका तेज केवल मुझे ही दिखाई दे रहा है। उसके सिर पर हाथ रखते हुए वह अजनबी बोला।

यदि अच्छे इंसान इस धरती पर न हों तो ये धरती कब की ख़त्म हो गई होती, मन ही मन सोच रहा था।

खाना खाने के बाद वह अजनबी उसे अपने कमरे पर ले गया। एक चटाई मात्र, चार साधारण कुर्सियां देखकर शंकर को कुछ आश्चर्य हुआ, लेकिन साहब आप मुझे यहां क्यों? शंकर, हीरे की कद्र जौहरी जानता है। कृषि की किसान। लोहे की कद्र लोहार करता है और सोने की सुनार। सरहद की कद्र अपने देश के जांबाज़ सैनिक करते हैं। उसी प्रकार तुम्हारी कद्र मैं करूंगा, यदि तुम झूठ नहीं बोलोगे तो।

उसके पश्चात् अजनबी शंकर को लेकर अधिवक्ता सुधा के घर की ओर चल पड़ा और अगले क्षण सुधा के चैम्बर में, केवल किताबें। थोड़ी देर बाद, चाय–पानी लीजिए, शंकर की ओर संकेत करती हुई सुधा ने कहा। जी, शंकर सहमा सा चाय पीने लगा। सारी बात सुनने के बाद सुधा ने कहा। शंकर तुम्हारी आंखों से जो बार–बार आंसू निकले जा रहे हैं, ये सारी कहानी बता चुके हैं। थोड़ा–सा समय दो। कानून इस देश का सर्वोच्च और उत्तम है, लेकिन विलंब होना ही इसकी प्रतिकूलता है।

और खचाखच भरे हुए न्यायालय में शंकर और अजनबी बैठे हुए थे। सुधा की प्लीड और धारावाहिकता देखने लायक थी। न्यायाधीश मुग्ध था उन साक्ष्यों पर जो सुधा पेश कर रही थी।

और एक महीने बाद वन विभाग को आदेश दिया गया कि जब पेड़ दुगने लगाए जाएंगे तो ही आधे काटे जाएंगे। पक्षी नहीं मारे जाएंगे। तालाब, जलाशय, झरना, नदियों पर कब्जा एक संज्ञेय दंडनीय अपराध माना जाएगा।

मैडम आपने, और बचा हुआ प्रकरण आंसुओं ने पूरा कर दिया, आंसू दिल की जुबान बन चुके थे। शंकर सुधा के यहां काम करने के लिए बिना वेतन के तैयार था, 'नहीं', वेतन भी लोगे और वाराणसी के दशाश्मेघ घाट पर गरीबों को जो भोजन दिया जाता है, उसमें मदद करोगे। एक हल्की सी चपत लगाती हुई सुधा ने शंकर से कहा।

स्वप्न

सीता रानी
बहु कार्यस्टाफ, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

रात बारह बजे तक भी मुझे नींद नहीं आई। हमारी कॉलोनी में किसी के यहाँ शादी थी। म्यूज़िक बहुत तेज़ बज रहा था, जिसकी वजह से हम सो नहीं पा रहे थे। करीब बारह बजे के आस–पास गाना बजना बन्द हुआ। फिर मुझे नींद आ गई। मैंने देखा कि मेरे घर मेरे भाई आए हैं और उन्होंने गेरुआ वस्त्र धारण किए हैं। माथे पर चन्दन का तिलक तथा उनका मुखमण्डल ऐसा चमक रहा था कि मानो कोई महान सन्त पुरुष हों। कुछ समय तक मैं उन्हें एक टक देखती रही। उन्होंने मुझे अपने साथ चलने को कहा और मैं उनके साथ चली गई। काफी दूर चलने पर मैंने देखा कि एक बहुत बड़ी नदी है। हम नदी के पास गए। मेरे भाई ने मुझे बताया कि ये बहुत पवित्र सरयू नदी है। वहां जा कर जल पी ले, मैंने उनकी बात सुनी और जल पीने चली गई। मैंने जल पीया, थोड़ा जल अंजलि में लेकर उनके मुख पर डाल दिया। फिर मैं वहां बैठ गई, वहां का वातावरण बहुत ही अच्छा था। मैंने देखा, दूर तक नदी की लहरें बह रही हैं पेड़, पौधे, ऊँचे–ऊँचे पहाड़, चारों तरफ हरियाली, दूर तक खुली जमीन, शुद्ध हवा, वहां का मौसम बहुत ही सुहावना था।

मैंने भाई से कहा कि यह जगह बहुत अच्छी है, यहाँ पर जमीन खरीद कर घर बना लो। फिर यहीं पर रहने लगो। लेकिन उन्होंने कहा कि ये जगह नदी के किनारे है, इसलिए यहां रहना ठीक नहीं। यहां पर मकान बनाने से बहुत हानि हो सकती है। क्योंकि यहाँ खाली जगह पर पानी कभी भी आ सकता है और सब कुछ बर्बाद हो सकता है। फिर हम वहां से वापस घर चले गए।

''कुछ दिन बाद'' घर पर मैं कुछ काम कर रही थी। अचानक एक बाबा आए, लम्बे–चौड़े, बड़ी–बड़ी दाढ़ी व लम्बे–लम्बे घुंघराले बाल, जटाधारी, बड़ी–बड़ी आँखें, चेहरा चमकता हुआ, बहुत बड़े तपस्वी मालूम होते थे। उन्होंने मुझे आवाज़ दी, मैं काम कर रही थी। मुझे आने में थोड़ी देर हो गई, जैसे ही मैं बाहर आई तो बाबा ने मुझे बहुत ज़ोर से डाँट लगाई, वे बहुत क्रोध में थे, उन्होंने अपनी चप्पल उतारकर मेरे सिर पर रख दी और कहा कि ये चप्पल गिरने न पाए, मैं चुपचाप डरी हुई, सहमी सी उनके साथ चलने लगी और मैंने सिर पर रखी चप्पल को अच्छी तरह पकड़ लिया जिससे कि वो गिर न जाए। मैं आगे चल रही थी, वे पीछे आ रहे थे, बाबा पीछे किसी से कह रहे थे कि ये लड़की कितनी सहनशील है, मैंने इसे इतना डांटा और इसके सिर पर

मैंने अपनी चप्पल रख दी, फिर भी ये चुपचाप चली जा रही है, मैं यह सब सुन रही थी फिर भी मैं चलती चली गई।

काफी दूर जाने के बाद हम एक मन्दिर में पहुंचे वहां बहुत भीड़ थी और कान्हा जी को भोग लगाना था। मैं वहीं खड़ी देख रही थी, बाबा मुझे वहां छोड़ कर कहां चले गए मुझे पता नहीं चला। मैं तो मन्दिर में कान्हा को देख रही थी, फिर मैं कान्हा के पास गई और कान्हा को

भोग लगाने लगी। ग्रास (रोटी का गस्सा) तोड़ कर सब्जी लगाई और उनके मुख में लगा दिया। उन्होंने मुंह खोला और निवाला खा लिया। सभी भक्तजन यह दृश्य देख रहे थे और बोल रहे थे कि यह देखो इसके हाथ से कान्हा खाना खा रहे हैं। मैं तो कान्हा जी के साक्षात् दर्शन कर रही थी एवं अपने कान्हा को भोजन खिला रही थी। फिर बालक रूप में वो नन्हे कान्हा जी मेरे साथ खेलने लगे। मैं उन्हें रोज भोजन खिलाती और उनके खाने के पश्चात् जो भोजन बच जाता वो मैं खा लेती, फिर हम खेलने लग जाते। वहाँ एक बड़ा सा चबूतरा था, जहां हम बैठ कर खाते और खेलते थे।

एक दिन भोजन के समय मैं उन्हें भोजन खिला रही थी, तो वो भोजन खाने के बाद आधा ही दूध पी कर अचानक जाने कहां चले गए। मैं हाथ में दूध लिए वहीं उनके आने का इन्तज़ार कर रही थी और बोल रही थी कि मेरे कान्हा कहां गए। मगर वे नहीं आए। मैंने बहुत इन्तज़ार किया, वे नहीं आए, जो भोजन बचा था वो मैंने स्वयं खा लिया, दूध भी पी लिया। मैंने कान्हा को इधर–उधर देखा मगर वो कहीं नहीं मिले। मैं यही बोल रही थी कि "मेरे कान्हा कहाँ गए ।" मैं उन्हें ढूंढ़ती रही पर वे नहीं मिले। मैं परेशान होने लगी थी।

मैंने देखा कि जिस जगह मैं कान्हा के साथ बैठी थी, वो जगह अनायास ही मुझसे दूर होती जा रही है। मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह हो क्या रहा है। जैसे कोई गाड़ी में बैठा हो और पीछे मुड़कर देख रहा हो कि गाड़ी आगे बढ़ती जा रही है और वो जगह दूर होती जा रही है। वैसे ही मैंने देखा कि मन्दिर मुझसे दूर होता जा रहा है। मैं दूर तक देखती रही, देखते ही देखते मन्दिर आंखों से ओझल हो गया।

अचानक मुझे महसूस हुआ कि मेरी आँखें बन्द हैं, और मैं लेटी हुई हूँ। लेकिन मैं आँखें खोल नहीं रही थी, न ही मैं खोलना चाहती थी। मैं तो बस अपने कान्हा को देखना चाहती थी। काफी देर तक ये सब चलता रहा, फिर धीरे–धीरे मैंने आँखें खोलीं, मै अपने कान्हा को देखना चाहती थी, जो कि मेरे मन्दिर में बैठे (स्थापित) थे। लेकिन कमरे में अँधेरा होने के कारण मैं उन्हें देख नहीं पाई तथा मैंने रोशनी भी नहीं की, यह सोच कर कि वे तो मन एवं आत्मा से दिखाई देते हैं। खुली आँखों से नहीं। मैंने आँखें बन्द कर लीं, कान्हा को खोजने के लिए।

ये सपना था या हकीकत मैं नहीं जानती। मुझे तो बस इतना मालूम है कि मैंने अपने कान्हा को अपने हाथों से भोजन खिलाया एवं उनके साथ खेली।

वह स्वप्न मुझे आज भी परेशान किए हुए है और मैं अनायास ही आज भी यही सोचने लगाती हूँ कि "मेरे कान्हा कहाँ गए"।

कविता

पल्लवी
बिजनिस एनालिस्ट, एन.आइ.एस.जी.
मुख्यालय, क.रा.बी. निगम, दिल्ली

कितने सारे शब्द जमाकर, मैंने कविता बाँधी थी,
हर इक पंक्ति संस्मरण थी, स्मृतियों की वह आँधी थी।

अब पढ़ती हूँ, तो लगता है, बात नहीं थी कहने की,
यूँ ही स्वर–व्यंजन में उलझी, याद–कहाँ थी रहने की,

मेरी सुधियाँ कुंदन सी थी, वह वर्णो की चाँदी थी।
कितने सारे शब्द जमाकर, मैंने कविता बाँधी थी।

वर्तमान में जीवन जीना

ऋतु वासन
निजी सचिव, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

"वर्तमान में जीवन जीना" शब्द सुनते ही हम सबको लगता है कि हम वर्तमान में ही तो जीते हैं। पर क्या वास्तव में यह सत्य है, नहीं। हम अपने मन में वर्षो पुरानी बातों को लेकर बैठे रहते हैं और उन्हें याद करके सोचते हैं कि तब ऐसा होता तो वैसा हो जाता। गीता सार में लिखा है कि जो होता है अच्छे के लिए होता है, जो हो रहा है अच्छा हो रहा है और जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। सच्चाई भी तो यही है कि जो होना होता है वह होकर ही रहता है और जो भी होता है वह अच्छे के लिए होता है पर हम इस बात को आसानी से स्वीकार नहीं करते हैं। हम अपने हर सुख–दुख, खुशी–गम के स्वयं ही ज़िम्मेदार होते हैं पर दोषी किसी और को ठहराते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर हम रेडियो सुन रहे हैं और अचानक कोई ऐसा गाना प्रसारित हो जाता है, जो हमें पसंद नहीं है, तो हम तुरंत चैनल बदल देते हैं क्योंकि वो हमें पसंद नही है और अपनी पसंद का चैनल लगा लेते हैं। ठीक वैसी ही स्थिति मन की भी होती है। यदि हम किसी बात से परेशान हैं और उसके बारे में देर तक सोचते हैं तो परेशान होंगे ही। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए? ऐसी स्थिति में हमें अपने मन को जल्द किसी ऐसी बात, विचार या वस्तु पर ले जाना चाहिए जो हमें अच्छी लगती है। ऐसा करने से हम सदैव खुश रहेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि हम अपने मन को रेडियो समझें, बात अच्छी न लगे तो चैनल बदल लें।

आज के समय में हर व्यक्ति जिंदगी की दौड़ में भाग रहा है। पर कहाँ, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। हम सब अपनी जिंदगी आज के नहीं अपितु बीते हुए समय या आने वाले समय की सोच रखकर जी रहें हैं। हम सब पर पुरानी बातें क्यों हावी रहती हैं, इसका जबाव किसी के पास नहीं है। उदाहरण के तौर पर जब हम कोई चुटकुला पढ़ते या सुनते हैं तो खूब हँसते हैं। फिर उसी को जब दुबारा सुनते हैं तो थोड़ा कम हँसते हैं और फिर कम। धीरे–धीरे उसकी हँसाने की क्षमता कम हो जाती है। कितनी अचरज की बात है कि हम एक चुटकुले पर बार–बार हँस नही सकते पर पहले घटित घटना को याद करके बार–बार मन को भारी कर लेते हैं।

सब कहते हैं कि "दो दिन की जिंदगी है हंसी–खुशी से जी लो" लेकिन हम में से बहुत कम लोग ही इस वाक्य पर अमल करते हैं। हम उन बातों को दिल से लगाते हैं जिनका सही मायने में हमारी जिंदगी से दूर–दूर तक कोई लेना–देना ही नहीं है।

एक बात और है, अगर आपके साथ भूतकाल में कुछ बुरा हुआ, आप काफी समय तक परेशान रहे पर कुछ नहीं कर पाए, तो क्या हुआ, बिना बात के ही परेशान रहे, जो होना था वही हुआ। अगर आज आप उस स्थिति को दोबारा सोचो तो आपको लगेगा कि आप यूँ ही इतना परेशान हुए। पुरानी बातों को सोचने से हमें कुछ प्राप्त नही होता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

कहने का भाव यह है कि अपने आप वर्तमान में रहकर ही जीएँ और उसके लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है योग,

साधना, ध्यान, सत्संग, स्वाध्याय और सेवा।

इसलिए व्यस्त रहें, मस्त रहें और स्वस्थ रहे।।

इस लेख का उद्देश्य यह नहीं है कि अपने पूर्व को इतना भूल जाएँ कि गलतियों से शिक्षा भी न लें या भविष्य के लिए योजना न बनाएँ। जिस प्रकार हम दूसरे के जीवन में हुई गलतियों से दुखी हुए बिना सबक लेते हैं, उसी प्रकार हमें अपने जीवन के पूर्व में हुई गलतियों से दुखी हुए बिना सबक लेना चाहिए।

ना किसी के प्रभाव में जीयो,
ना किसी के अभाव में जीयो
अगर जिंदगी को जीना ही है
तो अपने स्वभाव में जीयो।

निगम मुख्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय में दिनांक 14.09.2016 को हिंदी दिवस का आयोजन उल्लासपूर्वक किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री डी. लाहिड़ी, बीमा आयुक्त ने की तथा उन्होंने कार्यालय के दैनंदिन काम–काज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देते हुए सभी के लिए हिन्दी दिवस की शुभकामनाएं की।

इस अवसर पर श्री उपेंद्र शर्मा, निदेशक(राजभाषा प्रभारी) ने भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री के संदेश को पढ़ा तथा श्री श्याम सुंदर कथूरिया, उप निदेशक(राजभाषा) ने हिन्दी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। मंचासीन अधिकारियों ने निगम मुख्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के 12वें अंक का भी विमोचन किया।

समारोह में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं के साथ–साथ केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की प्रतियोगिताओं तथा मूल हिन्दी–टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया।

क.रा.बी.निगम साकार करे सपने

बलदेव राज
उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय
क.रा.बी.निगम, जालंधर।

वैसे तो हर वर्ष हजारों की संख्या में एम.बी.बी.एस. के पाठ्यक्रम के लिए विद्यार्थी दाखिला लेते हैं और शुल्क के तौर पर लाखों रुपये का खर्च माता–पिता को वहन करना पड़ता है। परंतु जब किसी बीमाकृत व्यक्ति का बेटा किसी चिकित्सा महाविद्यालय में केवल 2000 रुपये प्रतिमाह शुल्क पर क.रा.बी. निगम प्रबंधन कोटे से दाखिला प्राप्त करता है, तो माता–पिता की खुशी का कोई ठिकाना नही रहता है और वह खुशी जब बीमाकृत व्यक्ति के चेहरे पर झलकती है तो क.रा.बी.निगम संगठन का एक हिस्सा होने पर गर्व होना स्वाभाविक है।

श्री बलविंदर सिंह, जालंधर के एक व्यवसाय प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं और क.रा.बी.निगम की बीमा संख्या 1209841422, दिनांक 11/03/2010 से व्याप्त हैं। सन् 2013 में जब क.रा.बी.निगम प्रबंधन कोटे के दाखिले हेतु सीटें निकाली गईं तो श्री बलविंदर सिंह अपनी बेटी का दाखिला करवाना चाहते थे, परंतु उनके पांच साल उस समय तक पूरे नही हुए थे, अतः ऐसा संभव न हो सका पर। श्री बलविंदर सिंह ने हिम्मत नही हारी और वे अपने बेटे पर मेहनत करने लगे ताकि वे क.रा.बी.निगम कोटे के अंतर्गत अपने बेटे का दाखिला करवा सकें।

आउटरीच प्रोग्राम के तहत जालंधर में बड़े जोर–शोर से प्रचार भी किया गया था कि बीमाकृत व्यक्तियों के बच्चे भी डॉक्टर बन सकेंगे। इस सपने को हकीकत में बदलने के लिए श्री बलविंदर सिंह मेरे संपर्क में आए और उन्हें पूरी जानकारी दी गई कि किस प्रकार क.रा.बी.निगम प्रबंधन कोटे में दाखिला लिया जा सकता है। सन् 2016 में श्री बलविंदर सिंह के बेटे जसकरणजीत सिंह ने NEET 2016 की परीक्षा दी। क.रा.बी.निगम प्रबंधन कोटे से दाखिले हेतु पात्रता प्रमाणपत्र उप क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर से तत्काल जारी किया गया। श्री बलविंदर सिंह बताते हैं कि पात्रता प्रमाणपत्र हेतु जैसे ही उन्होंने उप क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर से संपर्क किया तो तत्काल वहाँ से प्रमाणपत्र जारी कर दिया गया। वे पात्रता प्रमाणपत्र लेकर मुख्यालय, नई दिल्ली में पहुँच गए और वे पात्रता प्रमाणपत्र जमा कराने वाले सबसे पहले व्यक्ति थे।

श्री बलविंदर सिंह और उसके परिवार में खुशी का तब कोई ठिकाना नहीं रहा, जब उनके बेटे को फरीदाबाद के चिकित्सा महाविद्यालय में क.रा.बी.निगम प्रबंधन कोटे के तहत दाखिला मिल गया। क.रा.बी.निगम के

(बीमाकृत व्यक्ति का परिवार)

इस उपलब्धि को सभी बीमाकृत व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर में आयोजित आउटरीच प्रोग्राम में श्री बलविंदर सिंह को आमंत्रित कर सम्मानित किया गया।

श्री बलविंदर सिंह ने आउटरीच प्रोग्राम में अपनी यादों को ताजा कर बताया कि उनके पिता को पेट का कैंसर था और उन्हें पेसमेकर की भी जरूरत थी। क.रा.बी.निगम, जालंधर द्वारा उसके पिता को अति विशिष्टता उपचार के लिए मोहाली भेजा गया और क.रा.बी.निगम को बदौलत उनके पिताजी स्वस्थ जीवन जी रहे हैं और उनकी दवा आज भी क.रा.बी. निगम अस्पताल से चल रही है। उन्होंने कहा कि क.रा.बी.निगम का नारा है 'चिंता से मुक्ति', यह बात मुझ पर एकदम सटीक बैठती है।

क.रा.बी.निगम सचमुच में चिंता से मुक्ति दिलाने का संगठन है, जो बीमाकृत व्यक्तियों के बच्चों को डॉक्टर बनाकर उनके सपने साकार करने में उनकी भरपूर सहायता करता है।

कभी - कभी अचानक

जितेंद्र सिंह
निजी सचिव, मुख्यालय
क.रा.बी. निगम, दिल्ली

कभी–कभी यह जिंदगी दौड़ने लगती है
तेज रफ्तार से
हाँफने लगते हैं हम इसके साथ चलते हुए
गुजर जाते हैं पलक झपकते ही
कितने लम्हे उम्र के
और फिर अचानक से लौट आती है जिंदगी
उसी पुराने ढर्रे पर !!

कभी–कभी देखने लगते हैं हम ख्वाब
हकीकत से परे
करने लगते हैं हर अधूरी ख्वाहिश पूरी
अपने ख्वाबों की दुनिया में
और फिर अचानक से खुल जाती है नींद
उसी पुराने तकिये पर !!

कभी–कभी खो जाते हैं
दुनियादारी की भीड़ में
जोड़–घटा के चक्रव्यूह में फंस जाते हैं
अभिमन्यु की तरह
और फिर अचानक से आ जाती है सुध
उसी पुरानी सड़क पर !!

कभी–कभी हम बन जाते हैं परिपक्व
सारी दुनिया के लिए
दिखाते हैं अपनी प्रतिभा अपना व्यक्तित्व
जो रचा हुआ है
और फिर अचानक से लौट आते हैं वही
जो वास्तव में हैं
उसी पुराने बचपन पर !!

आपका पत्र मिला

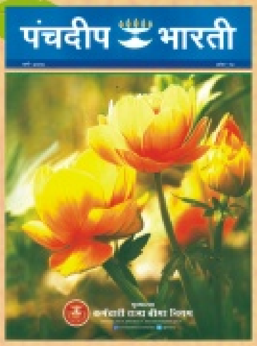

मुख्यालय की गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का 12वां अंक प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

सर्वप्रथम पत्रिका के पिछले अंक को नराकास (उपक्रम), दिल्ली से प्रथम पुरस्कार मिलने पर बधाई। इस अंक की भी साज–सज्जा आकर्षक तथा गुणवत्ता उच्च कोटि की है। पत्रिका में समाहित विविध विषयक लेख कहानियां, कविताएं अत्यंत रोचक, उपयोगी और उत्कृष्ट हैं। भारत का संविधान–प्रादेशिक भाषाएं, सहयात्री, प्रशासनिक अधिकरण एवं याची का कथन, आधुनिक युग का सच, स्वदेश प्रेम, योग और जीवन, सूफी संत–बुल्ले शाह आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय हैं। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति को दर्शाती हैं।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई तथा आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

एस. बिश्वास
क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, फरीदाबाद

निगम मुख्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का बारहवां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

विभिन्न विषयों पर रचनाकारों के रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों और मुख्यालय तथा अधीनस्थ निगम कार्यालयों की विभिन्न गतिविधियों के सुंदर छायाचित्रों से सुसज्जित पत्रिका का यह अंक मुख्यालय की गरिमा के अनुरूप बहुत ही सजीव एवं पठनीय है। पत्रिका की प्रस्तुति एवं साज–सज्जा आकर्षक एवं मनोहारी है। पत्रिका का मुद्रण एवं पृष्ठ संयोजन उच्चकोटि का है। पत्रिका में सम्मिलित सभी लेख रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के 27वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की सचित्र प्रस्तुति प्रशंसनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है।

बारहवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए आपको तथा पत्रिका प्रकाशन समिति से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

एम.के. आर्य
क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चंडीगढ़

आपकी विभागीय गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के बारहवें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्कृष्ट है तथा पत्रिका में मुख पृष्ठ पर पुष्प का चित्र अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका के सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ इनमें वैचारिक सूझबूझ का परिचय भी मिलता है। विशेष रूप से 'भारत का संविधान–प्रादेशिक भाषाएं', 'टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें', 'सहयात्री', 'प्रशासनिक अधिकारी एवं याची का कथन', 'योग और जीवन' आदि रचनाएँ पठनीय हैं।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई।

डॉ. अरुण कुमार शर्मा
चिकित्सा अधीक्षक
क.रा.बी.निगम आदर्श अस्पताल, नामकुम

मुख्यालय से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' वर्ष 2016, अंक–12 की प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए धन्यवाद। सर्वप्रथम पत्रिका के पिछले अंक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली द्वारा वर्ष 2015–16 के लिए 'प्रथम पुरस्कार' से नवाज़े जाने पर हार्दिक बधाई।

पत्रिका को आद्येपांत पढ़ा। पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका की साज–सज्जा व मुद्रण उच्च स्तरीय है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रोचक एवं उत्कृष्ट हैं। रचनाओं में विशेषतः 'भारत का संविधान–प्रादेशिक भाषाएं', 'टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें', 'प्रशासनिक अधिकरण एवं याची का कथन', 'योग और जीवन' एवं 'सूफी संत 'बुल्ले शाह'' ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी हैं। विभिन्न कार्यकलापों के चित्र राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे प्रयासों एवं उपलब्धियों को दर्शाते हैं तथा पत्रिका को सूचनापरक बनाते हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई और आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

पी.के. नरूला
संयुक्त निदेशक(प्रभारी), उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, लुधियाना

आप द्वारा भेजी गई कार्यालय की गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का 12वां अंक हमें प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में विविध प्रकार की ज्ञानवर्धक सामग्री संकलित है। पत्रिका प्रेषण हेतु धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी तरह की गतिविधियों के छायाचित्र मनोरम हैं। पत्रिका में शामिल लेख 'भारत का संविधान–प्रादेशिक भाषाएं' संविधान द्वारा दी गई विशेषताओं का उल्लेख करता एक ज्ञानवर्धक लेख है। सर्विस के दौरान आने वाली प्रशासनिक समस्याओं से पार पाने के लिए श्री क्षेत्रपाल शर्मा, पूर्व संयुक्त निदेशक(राजभाषा) द्वारा लिखा लेख 'प्रशासनिक अधिकरण एवं याची का कथन' अत्यंत व्यावहारिक है। साथ में 27वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की झलकियों का सुंदर चित्रण किया गया है।

पत्रिका में संकलित अन्य रचनाएं भी विशेष रूप से ज्ञानवर्धक व पठनीय हैं। पत्रिका में ऐसी रचनाओं से पाठकों के ज्ञान में न केवल वृद्धि होती है बल्कि पाठकों के जीवन पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसी रचनाएं प्रकाशित करने के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

विनोद राय
वरिष्ठ प्रबंधक(राज.एवं सीएसआर)
भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड, दिल्ली

आपके संस्थान से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के अंक–12 की प्रति प्राप्त हुई। इसमें दिए गए अधिकतम लेख जानकारी पूर्ण एवं रोचक लगे, खासकर, 'टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें', 'सूफीसंत बुल्लेशाह', 'योग और जीवन', 'फैशन में करियर' एवं 'सोने की चिड़िया' लेख। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा वर्ष 2015–16 के लिए आपकी पत्रिका 'पंचदीप भारती' को गृह पत्रिका में प्रथम पुरस्कार मिला, इसके लिए बहुत–बहुत बधाई। आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप इसी तरह इस पत्रिका के माध्यम से उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सूचना प्रदान करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

धन्यवाद एवं शुभकामनाओं सहित,

आर. चन्द्रशेखर
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सीएसआइआर
कोशिकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र, हैदराबाद

'पंचदीप भारती' अंक–12 प्राप्त हुआ। डॉ. पन्ना प्रसाद जी ने अपने आलेख 'भारत का संविधान–प्रादेशिक भाषाएं' में राजभाषा विषयक अनेक ऐतिहासिक पक्षों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनके आलेख सदैव प्रेरणास्रोत रहे हैं। श्री भूप सिंह यादव ने कविता 'स्वदेश प्रेम' तथा श्री दीपक कुमार ने 'जिंदगी' में सशक्त रचनात्मक कौशल का परिचय दिया है। श्री आलोक कुमार का साहित्यिक आलेख सूफी संत 'बुल्ले शाह' प्रशंसनीय है। आशा है कि 'पंचदीप भारती' के आगामी अंक में उनसे इसी प्रकार का एक और साहित्यिक आलेख पढ़ने को मिलेगा। पत्रिका के अन्य समस्त रचनाकारों ने भी परिश्रम के साथ लिखा है। 'पंचदीप भारती' का संपादकीय कौशल, विषय सामग्री चयन तथा संयोजन अनुकरणीय है। किसी भी पत्रिका के संपादक को 'पंचदीप भारती' अवश्य पढ़नी चाहिए।

शुभकामनाओं के साथ,

डॉ. राजनारायण अवस्थी
हिंदी अधिकारी
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, हैदराबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'पंचदीप भारती' के बारहवें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएँ सृजनात्मकता से ओत–प्रोत हैं। विशेषकर श्रीमती ऋतु वासन की कविता 'औरतें भी कितनी अजीब होती हैं' कुछ ही शब्दों में नारी जीवन के पूरे संघर्ष को प्रस्तुत कर देती है। कविताओं में मधु कौशिक की 'जीवन की सार्थकता', शालिनी गाबा की 'हिंदी', सुभाष कुमार की 'मेरे साहब' उल्लेखनीय है। भूपसिंह यादव की 'स्वदेशप्रेम' भारतीय सैनिकों के मनोबल को बढ़ाती है तथा संतोष कुमार की आधुनिक युग का सच आज की जीवनशैली के ऊपर एक तमाचा है। इसके अलावा बाकी रचनाएँ भी सराहनीय हैं।

संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. पी.आर. वासुदेवन
हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु

कर्मचारी राज्य बीमा निगम मुख्यालय की गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के बारहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। उक्त पत्रिका का अध्ययन किया। इसमें सम्मिलित सभी कृतियां अच्छी लगीं। इसमें संकलित रचनाएं ज्ञानवर्धक, रोचक, प्रासंगिक, प्रेरणादायक, विषयस्पर्शी, मर्मस्पर्शी और व्यावहारिक हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उत्तम प्रकृति के हैं जिससे आपके विभाग के स्टाफ सदस्यों का ज्ञान और हिंदी प्रेम झलकता है। हम आशा करते हैं कि आप आगे भी इस पत्रिका के आगामी अंक भी हमें भेजते रहेंगे।

धन्यवाद,

जगदीश कुमार
अनुभाग अधिकारी
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, दिल्ली

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की हिंदी गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, हार्दिक धन्यवाद।

पिछले अंक गृह पत्रिका पुरस्कार वर्ष 2015–16 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया, यह पत्रिका के इस अंक में सूचित किया गया है। यह बड़े गौरव की बात है। इस पत्रिका का संपूर्ण भारतवर्ष में गरीब, ग्रामीण अंचल तक प्रचार–प्रसार है क्योंकि संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों को निगम के माध्यम से 'पंचदीप भारती' पत्रिका के द्वारा जोड़ा जा रहा है, यह बहुत बड़ा राष्ट्रीय कदम है। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को कोटि–कोटि साधुवाद।

भूप सिंह यादव
अर्थ मंत्री
केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, दिल्ली

आप द्वारा भेंट की गई पत्रिका प्राप्त हो गई है। इसके लिए धन्यवाद। आपने, जब मैं मुख्यालय आया था, मुझे पत्रिका भेजने के लिए कहा था, वह आप ने याद रखा और मुझे सम्मानित किया और आप भी सम्मानित हुये हैं।

जैसा कि मेरा आप के साथ काम करने का अनुभव है, आप हिन्दी भाषा के विद्वान ही नहीं बल्कि एक नेक और सच्चे इन्सान भी हैं। आप का नज़रिया, जो विषयों का परखने का है सराहनीय है। आप जैसे अधिकारियों से विभाग समृद्ध बनता है।

मुझे अपार प्रसन्नता है कि आप जैसे लोग मेरे मित्र है। यही मित्रता एक सुखदायी धारा है, जिसमें मैं जीवन पर्यन्त निरन्तर बहते रहने की कामना करता हूँ। पत्रिका निकालने के सार्थक प्रयास के लिए बहुत – बहुत बधाई

करण सिंह
पूर्व उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, गुड़गांव

आपके कार्यालय से प्रकाशित गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का 12वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद।
विभिन्न कलेवर से सजी आपकी पत्रिका काफी रोचक है। एक तरफ नयी जानकारियों से लबरेज आलेख 'टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें', विधिक जानकारी के साथ 'प्रशासनिक अधिकरण एवं याची का कथन', 'घरेलू हिंसा' जहां पाठकों का ज्ञानवर्धन करती हैं वहीं दूसरी ओर 'सहयात्री', 'भाषा' अद्वितीय भाव प्रस्तुत करते हैं। पत्रिका की अन्य रचनायें भी काफी ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में गतिविधियों का सचित्र विवरण भी सराहनीय है।
पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

जानकी सिंह
उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बैरकपुर

आपकी पत्रिका 'पंचदीप भारती' के बारहवें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए आपको हार्दिक धन्यवाद।
हिंदी पत्रिका 'पंचदीप भारती' के बारहवें अंक के सफल प्रकाशन एवं नराकास (उपक्रम), दिल्ली से प्राप्त प्रथम पुरस्कार के लिए बधाई।
श्री उमाशंकर मिश्र की कविता और कहानी, साथ ही डॉ. पन्ना प्रसाद, श्री श्याम सुंदर कथूरिया, श्री क्षेत्रपाल शर्मा, श्रीमती अर्चना कपूर, श्रीमती पल्लवी, श्रीमती गरिमा पांडे, श्री प्रवीण कुमार, श्री पंकज वोहरा, श्रीमती शालिनी गाबा, श्रीमती मधु कौशिक, श्री सुभाष कुमार एवं श्री आलोक कुमार की रचनाएं प्रशंसनीय हैं।
मुख पृष्ठ के साथ–साथ कार्यालयी गतिविधियों के चित्र व समाचार आकर्षक हैं।
संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाइयाँ।
अगले अंक के लिए शुभेच्छा सहित,

प्रवीण सहगल
उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर

''पंचदीप भारती'' का बारहवाँ अंक भी पूर्व के अंकों की भांति लेख, कहानियों, कविताओं रूपी रत्नों से सुशोभित है। पत्रिका जीवन के हर क्षेत्र को अपने में समाहित किये हुए है, चाहे वह योग हो या फैशन की दुनिया। साथ ही निगम कार्यालयों में संपन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र आकर्षक एवं मनमोहक हैं।

''पंचदीप भारती'' निगम कार्यालयों तथा अस्पतालों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रकाश स्तंभ की तरह कार्य कर रही है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाइयां एवं आगामी अंक हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

विमल रावत
उप निदेशक,
क.रा.बी. निगम अस्पताल, मानेसर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह–पत्रिका 'पंचदीप भारती' के 12वें अंक, वर्ष–2016 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के अग्रेषण के लिए हार्दिक आभार।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त आलेख अच्छे एवं उच्च कोटि के हैं, जिनमें से 'औरतें भी कितनी अजीब होती हैं', 'सूफी संत 'बुल्ले शाह'', 'टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें', 'सहयात्री', आदि रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय हैं।

विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका और भी रोचक एवं उपयोगी बनी है। कुल मिलाकर पत्रिका संग्रहणीय बनी है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं सहयोगियों को हमारी हार्दिक बधाइयाँ।

आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन अनवरत जारी रहेगा।

आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ।

बलदेव राज
उप निदेशक(राजभाषा प्रभारी), उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, जालंधर

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' का बारहवां संस्करण प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

सर्वप्रथम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 'पंचदीप भारती' को प्रथम पुरस्कार प्रदान किए जाने पर बधाई स्वीकार करें। पत्रिका की साज–सज्जा आकर्षक, सुरुचिपूर्ण एवं मुद्रण उच्च कोटि का है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं स्तरीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। 'योग और जीवन' स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से अत्यंत उपयोगी लेख है। डॉ. पन्ना प्रसाद, पूर्व संयुक्त निदेशक(राजभाषा) द्वारा लिखा गया लेख 'भारत का संविधान–प्रादेशिक भाषाएं' विस्तृत जानकारियों से भरपूर है। 'टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें' लेख से टाइपिंग के विषय में अत्यंत उपयोगी जानकारी मिलती है। पत्रिका में मुद्रित छायाचित्रों से निगम के विभिन्न कार्यालयों के कार्य–कलापों की जानकारी प्राप्त हो रही है। निःसंदेह यह पत्रिका सभी दृष्टियों से राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में सक्षम है। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

जे. प्रसाद
सहायक निदेशक(राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कानपुर

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। सर्वप्रथम गृह पत्रिका प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई। पुराने अंकों की तरह इस अंक की साज–सज्जा तथा पृष्ठ संयोजन भी उच्चकोटि का है।

इसमें शामिल सभी रचनाएं स्तरीय हैं। प्रादेशिक भाषाओं तथा वॉइस टाइपिंग लेख सूचनापरक तथा ज्ञानवर्धक हैं। आशा है कि आगे भी यह पत्रिका हमें नई जानकारियों से अवगत कराती रहेगी। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद।

प्रमोद कुमार निराला
सहायक निदेशक(राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पटना

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'पंचदीप भारती' वर्ष 2016, अंक–12 प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका में छपी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं। पत्रिका में छपे सभी लेख विवधमुखी एवं प्रशंसनीय हैं। हिंदी भाषा में औरतें भी कितनी अजीब होती हैं। ''टाइपिंग जाने बिना हिंदी में टाइप करें'', आधुनिक युग का सच, ''योग और जीवन'' एवं ''घरेलू हिंसा'' विशेष रूप से पठनीय हैं। वर्ष 2017 के आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

डी.बी. बोरीसा
सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, ठाणे

सातवाँ विश्व हिंदी दिवस एवं सांस्कृतिक समारोह 2017

परिवर्तन जन कल्याण समिति-दिल्ली (पंजी०)

संख्या S/46339-2003
कार्यालय – 23/672, भूतल, डी.डी.ए. फ्लैट, मदनगीर, नई दिल्ली–110062
Tel.: 09899112882, Email : ceoparivartan@gmail.com; dpsinghrathore@gmail.com

गृह पत्रिका पुरस्कार

परिवर्तन जन कल्याण समिति–दिल्ली (पंजी.) **कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय** की छमाही गृह पत्रिका **'पंचदीप भारती'** को उसकी श्रेष्ठता के आधार पर वर्ष 2015–2016 के लिए द्वितीय पुरस्कार (क क्षेत्र) से सगर्व सम्मानित करती है और पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य की कामना करती है।

दिनांकः 10.01.2017
स्थानः नई दिल्ली

प्रसन्न कुमार पाटसाणी
डॉ. प्रसन्न कुमार पाटसाणी
कार्यक्रम संरक्षक एवं संसद सदस्य, लोक सभा

राठौर
देशपाल सिंह राठौर
संस्थापक अध्यक्ष

हिन्दी पत्रिका पंचदीप भारती (वर्ष 2015–16) के श्रेष्ठ संपादन के लिए 'परिवर्तन जन कल्याण समिति दिल्ली (पंजीकृत)' की ओर से डॉ० (प्रोफेसर) प्रसन्न कुमार पाटसाणी, संयोजक, संसदीय राजभाषा समिति (बाएं) तथा श्री महेश चंद्र शर्मा, पूर्व महापौर, दिल्ली (मध्य) से 'क' क्षेत्र के लिए द्वितीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री श्याम सुंदर कथूरिया, उप निदेशक (राजभाषा) (दाएं) मुख्यालय, क.रा.बी. निगम।

हिन्दी पत्रिका 'सेनानी' (वर्ष 2016) के श्रेष्ठ संपादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता की ओर से पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी (मध्य) से तृतीय पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री अरुण पांडेय, निदेशक(दाएं) तथा श्री पोलीकार्प सोरेंग, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक (बाएं) उप क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी. निगम, बैरकपुर।

आईपी
वीआईपी
ईएसआईसी-2.0
चिंता से मुक्ति
ईएसआईसी - 2.0
स्वास्थ्य सुधार कार्यक्रम
इंद्रधनुष स्वस्थ मुस्कान का!
अभियान इंद्रधनुष
विशिष्ट रंगों की चादरों का प्रतिदिन बदलाव
ईएसआईसी अस्पताल इस दूरदर्शी पहल के साथ और भी अधिक जीवंत, साफ और स्वच्छ हो गये हैं। अस्पताल में बिस्तरों की चादर का अब एक निर्दिष्ट रंग हर दिन के लिए होगा। अभियान इंद्रधनुष एक कदम है बेहतर स्वास्थ्य की ओर, ताकि ईएसआईसी के बीमित व्यक्तियों को बेहतर ईलाज व उपयुक्त माहौल दिया जा सके।
चादरों का रंग: बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल
दिन: रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार
श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment
Government of India
वेबसाइट: www.labour.gov.in
www.facebook.com/labourministry @labourministry
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली – 110 002
वेबसाइट: www.esic.nic.in, www.esic.in, www.esichospitals.gov.in
www.facebook.com/esichq @esichq
Interads'17
अधिक जानकारी के लिए कृपया अपने नज़दीकी ईएसआईसी अस्पताल/शाखा/प्रभागीय/उप-क्षेत्रीय/क्षेत्रीय कार्यालय से संपर्क करें अथवा
www.esic.nic.in, www.esic.in, www.esichospitals.gov.in पर लॉग ऑन करें या टोल फ्री नं. 1800 11 2526 पर कॉल करें. चिकित्सा हेल्पलाईन नं. 1800 11 3839